संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ जून २०१६
वर्ष : २५ अंक : १२
(निरंतर अंक : २८२)
पृष्ठ संख्या : ३२+४
(आवरण पृष्ठ सहित)
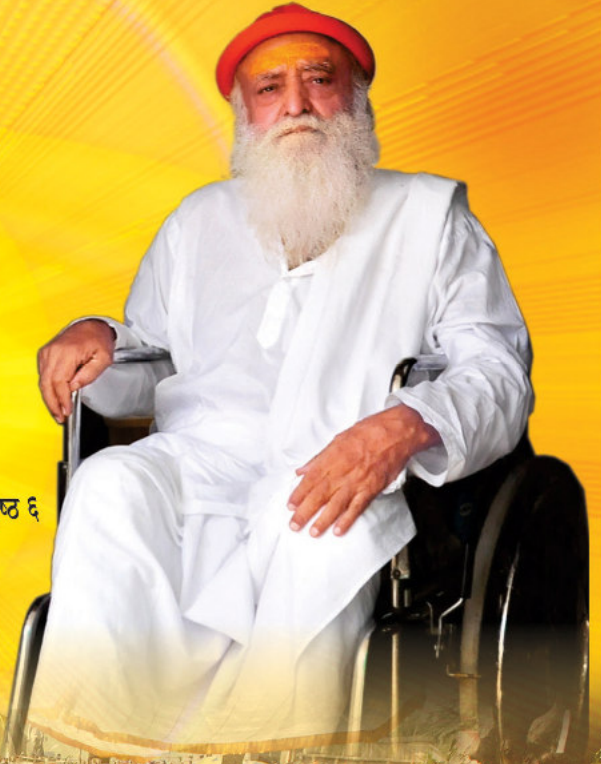
उज्जैन कुम्भ में संतों ने की बापूजी की शीघ्र रिहाई की माँग पृष्ठ ६

७९ वर्ष की उम्र, दिनोंदिन बिगड़ता स्वास्थ्य... बिना किसी आरोप के सिद्ध हुए पौने तीन वर्षों से पूज्य बापूजी को जेल में रखे जाने से करोड़ों लोग आहत !

अखिल भारतीय नारी रक्षा मंच द्वारा दिल्ली में हुआ विशाल जन-सत्याग्रह

पृष्ठ २७

‘भजन करो, भोजन करो, पैसा पाओ’ योजना के तहत पलाश शरबत-बोतलों का वितरण

गरीबों में अनाज, बर्तन, कपड़े, रुपये, छाते, चप्पल आदि का वितरण व भंडारे

गर्मी से व्याकुल राहगीरों को शीतलता प्रदान कर रहा शरबत एवं छाछ वितरण अभियान

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं । अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें ।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें ।

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २५ अंक : १२ मूल्य : ₹ ६

भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २८२)

प्रकाशन दिनांक : १ जून २०१६

पृष्ठ संख्या : ३२+४ (आवरण पृष्ठ सहित)

ज्येष्ठ-आषाढ़ वि.सं. २०७३

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम

प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान

मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा

प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)

मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५

सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी

सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा

संरक्षक : श्री जमनादास हलाटवाला

सम्पर्क पता :

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)

फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८

केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२

Email : ashramindia@ashram.org

Website : www.ashram.org
www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी	सिंधी व सिंधी (देवनागरी)
वार्षिक	₹ ६०	₹ ७०	₹ ३०
द्विवार्षिक	₹ १००	₹ १३५	₹ ५५
पंचवार्षिक	₹ २२५	₹ ३२५	₹ १२०
आजीवन	₹ ५००	----	₹ २९०

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

इस अंक में...

बापूजी ने जीने का सही ढंग सिखाया जीवन का उद्देश्य समझाया

(गतांक से आगे)

दंडवत् प्रणाम का रहस्य

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''जीवन अहंकार को सजाने के लिए नहीं, परमात्मा से प्रीति करने के लिए है। धन का अहंकार, सत्ता का अहंकार, सौंदर्य या बुद्धिमत्ता का अहंकार निरहंकार नारायण साथ में होते हुए भी उससे मिलने नहीं देता। इसलिए इस अहंकार को मिटाने के लिए धर्म ने भगवान को दंडवत् प्रणाम करने का विधान किया है। मनोवैज्ञानिक बताते हैं कि आदमी खड़ा रहता है तो उसका अहंकार भी खड़ा रहता है और मन में दबी हुई बातें बताने में वह सिकुड़ता है पर जब उसको टेबल पर सुलाते हैं और फिर पूछते हैं तो वह कुछ-कुछ बताने लगता है।

एक जापानी युवक घूमता-घामता तिब्बत के एक लामा (बौद्ध आचार्य) के आश्रम में पहुँचा। उस आश्रम में लामा और उनके कई शिष्य रहते थे। युवक ने लामा से कहा : ''मैं आपका नाम सुनकर यहाँ आया हूँ और कुछ सीखना चाहता हूँ, कुछ पाना चाहता हूँ।''

लामा ने कहा : ''इस आश्रम में सीखने के लिए कुछ नहीं है, पाने के लिए कुछ नहीं है, यह आश्रम तो केवल खोने के लिए है अर्थात् सीखा हुआ भूल जाने के लिए है। अपनी जो कुछ कल्पनाएँ हैं, मान्यताएँ हैं उन्हें खो डालना है। यहाँ कोई रिवाज नहीं है, कोई नियम नहीं है सिवाय एक कड़े नियम के कि प्रत्येक आश्रमवासी अधिष्ठाता अर्थात् सद्गुरु को जब-जब वे दिख जायें तब-तब दंडवत् प्रणाम करे। बैठे हुए दिख जायें तो दंडवत् करे, घूमते हुए दिख जायें तो दंडवत्... दिन में १० बार, २० बार, ५० बार, १०० बार, कभी इससे भी अधिक बार ऐसा अवसर आ सकता है।''

उस युवक ने लिखा है :

हम जापानी लोग किसीके आगे जल्दी झुकते नहीं हैं, अतः दिन में १०-२० बार दंडवत् करना मेरे लिए बड़ी

कठिन बात थी । फिर भी प्रयोग के लिए मैं वहाँ रहने लगा । पहले ५-१० बार तो बड़ी मेहनत पड़ी, बड़ी तकलीफ हुई किंतु और लोग करते थे तो मैं भी उनके साथ करने लग गया ।

२-४ दिन बीते, फिर वह पकड़ और हठ बिखरता गया तथा स्वाभाविक ही दंडवत् होने लगा । फिर कभी गुरुदेव न निकलते तो उनके द्वार पर ही दंडवत् कर लिया करता था । द्वार पर न जाऊँ तो उनकी कुटिया के आसपास के वृक्षों को ही दंडवत् कर लिया करता था । फिर तो मुझे दंडवत् करने में इतना मजा आने लगा कि वृक्ष हो चाहे कुटिया, चाहे कुछ भी न हो, कर दिया दंडवत्... बस, आनंद-आनंद बरसने लगा ।

मेरा समर्पण भाव बढ़ता गया और एक दिन गुरुदेव की कृपा मुझ पर छलकी । तब गुरुदेव ने मुझसे कहा : ''अब तेरा काम हो गया है । मैंने अपने को दंडवत् कराने के लिए या अपने अहंकार को पुष्ट करने के लिए यह नियम नहीं रखा । प्रणाम करनेवाले को तो मजा आता है लेकिन उसे स्वीकार करनेवाला बड़े खतरों से गुजरता है । यदि वह सावधान न रहे तो उसमें देहाभिमान आ सकता है और उसके लिए खतरा पैदा हो सकता है ।

यहाँ का दंडवत् प्रणाम का नियम व्यक्तिगत धारणाओं, मान्यताओं और अध्यास को बिखेरने की एक प्रक्रिया है । इस प्रक्रिया में तू उत्तीर्ण हो गया है । अब मेरी हाजिरी के बिना भी तू अपने-आपमें परितृप्त रह सकता है । मेरे आश्रम के पेड़-पौधों के बिना भी तू कुछ हद तक आनंदित रह सकता है ।''

यह उपासना की छोटी-सी प्रक्रियामात्र है । तत्त्वज्ञान के बिना पूर्ण ज्ञान का कोई पता ही नहीं चलता । जैसे हनुमानजी को श्री सीतारामजी के सत्संग से पूर्णता का पता चला । वसिष्ठजी के उपदेश से श्रीरामचन्द्रजी अपने पूर्णता के स्वभाव में प्रतिष्ठित रहते थे ।

केवल दंडवत् प्रणाम तो ठीक है, अहंकार छोड़ने के लिए सुंदर साधन है दंडवत् लेकिन ब्रह्मज्ञान पाने का उद्देश्य बनाओ । महिलाएँ दंडवत् प्रणाम करेंगी तो उनको हानि होगी । महिलाएँ दंडवत् प्रणाम न करें, ऐसा शास्त्र का आदेश है । दंडवत् से छाती पृथ्वी पर लगेगी तो दोष लगता है, हानि होती है । महिलाएँ घुटने टेक के प्रणाम कर सकती हैं ।''

जीवन-बीमा करने की युक्ति सिखायी

पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है : ''रामजी रावण को तीरों का निशाना बनाते हैं और रावण का सिर कटता है, फिर से लगता है क्योंकि उसे वरदान मिला था । लेकिन रावण दंग रह गया कि जब वह रामजी पर बाण छोड़ता है तो बाण रामजी की तरफ जाते-जाते उनके सिर में लगता ही नहीं था । रामजी के सिर की तरफ रावण का बाण जाय ही नहीं ! रावण सोचे-सोचे... 'आखिर क्या है, क्या है ?...' शिवजी ने प्रेरणा की कि इनके सिर का तो बीमा किया हुआ है । रामजी तो अपने सिर का बीमा करा चुके थे और रावण का बीमा था नहीं !

रामजी ने बीमा क्या करवाया था, पता है ? शिवाजी ने भी बीमा कराया था । रामी रामदास का भी बीमा था । मेरे गुरुदेव भगवत्पाद लीलाशाहजी बापू ने भी बीमा कराया था । मैंने भी बीमा कराया है । अब तुम ढूँढ़ते रहो किधर बीमा कराते हैं ? कैसा बीमा होता है ? जरा सोचो । अरे... जैसे रामजी प्रातःकाल उठकर माता-पिता और गुरु को प्रणाम करते, मत्था नवाते तो 'पुत्र ! चिरंजीवी भव । यशस्वी भव ।' आशीर्वाद मिलता । माँ-बाप और गुरु के आशीर्वाद से बड़ा कोई बीमा होता है क्या ? तो तुम भी बीमा करा लिया करो और तुम्हारे बच्चों को भी यह बात बताना कि रामजी ने ऐसा बीमा करा लिया था ।

माता-पिता व सद्गुरुओं के आशीर्वाद और ब्रह्मज्ञानी सद्गुरु के सत्संग का आदर करने से मौत मोक्ष में बदल जाती है ।'' (क्रमशः)

उज्जैन कुम्भ में संतों ने की बापूजी की शीघ्र रिहाई की माँग

निर्दोष बापूजी को पौने तीन वर्षों से जेल में रखे जाने से कुम्भ में पधारे अनेक साधु-संतों के हृदय में व्यथा देखी गयी । उन्होंने पूज्य बापूजी के समर्थन में अपने उद्‌गार प्रकट किये तथा उनकी जल्द रिहाई हेतु सरकार से अपील भी की । उज्जैन कुम्भ में आयोजित 'चतुर्थ हिन्दू संसद' में भी पूज्य बापूजी के खिलाफ साजिश रचे जाने की बात उठी ।

श्री १०८ श्री नरेन्द्र गिरिजी, अध्यक्ष, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद : विदेशी षड्यंत्रकारियों द्वारा संतों को बदनाम करने के लिए उनको गलत दिखाया जा रहा है । संत आशारामजी बापू पर जो आज आरोप लगे हैं ऐसे कइयों पर लगे हैं, उनकी जमानत हो रही है पर बापू की जमानत क्यों नहीं हो रही है ? तमाम ऐसे चैनल हैं जो अपनी टीआरपी के चक्कर में, विदेशी पैसा खाकर सनातन संस्कृति को बदनाम करने में लगे हैं । बापूजी को परेशान किया जा रहा है, जो गलत है ।

पद्म विभूषण जगद्‌गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्यजी, तुलसी पीठाधीश्वर : आशारामजी को अब छोड़ देना चाहिए, बहुत हो चुका, अब अत्याचार नहीं होना चाहिए । मैं यह बात प्रधानमंत्री तक पहुँचाऊँगा ।

श्री देवकीनंदन ठाकुरजी, प्रसिद्ध कथाकार : हिन्दू धर्म साधु-संत, गुरु, मठ, मंदिर आदि से ही चलता है । आज इन्हींको निशाना बनाया जा रहा है । बॉलीवुड के हीरो को बेल और संतों को जेल, यह क्या है ! देश को आगे बढ़ाना है तो सभीके लिए कानून एक जैसा होना चाहिए । जब तक आरोप साबित नहीं होता तब तक इस देश में सबको बेल का तो अधिकार है ही । मुझे ऐसा लगता है कि बापूजी को बेल न देकर ही सबसे बड़ा गुनाह हो रहा है । कुछ-न-कुछ साजिश तो है ही । मैं उम्मीद करता हूँ कि वे जल्दी बाहर आयेंगे ।

महंत श्री हरिगिरिजी, महामंत्री, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद : जिस दिन बापूजी की गिरफ्तारी हुई थी उस दिन मैंने कहा था कि सरकार जल्दबाजी में है, जाँच जरूर कर लेनी थी पहले । मेरा तो स्पष्ट रूप से मानना है कि कहीं-न-कहीं षड्यंत्र किया गया है।

परमहंस डॉ. अवधेशपुरीजी, महामंत्री, महानिर्वाणी अखाड़ा, महाकाल मंदिर (उज्जैन) : बापूजी को माननेवालों की संख्या जब ६ करोड़ हो गयी तो विदेशी ताकतें अंदर से हिल चुकी थीं, वे घबरा गयीं । उनको लगा कि 'कोई-न-कोई माध्यम हमको बनाना पड़ेगा ।' और बहुत आसान है, जिस ढंग से उनको फँसाया गया है, ऐसे कोई भी व्यक्ति किसीको भी फँसा सकता है । उनके सारे कार्यों को एक किनारे कर दिया गया है और एक आरोप, जो सिद्ध भी नहीं हो पाया, के लिए उनको इतनी बड़ी यातनाएँ दी गयी हैं । हिन्दू धर्म को माननेवाले जो लोग हैं उन्हें इस बात को समझना पड़ेगा । सबसे बड़ी दुःख की बात तो यह है कि मीडिया जैसा दिखाता है लोग वैसा समझते हैं । आशारामजी ने कोई गलती नहीं की । जो सजा उनको दी जा रही है वह सरासर गलत है । आरोप तो भगवान पर भी लगा दिये गये थे । बापूजी पर आरोप लगवाये जाने से जो काम उन्होंने समाज के लिए, राष्ट्र और धर्म के लिए किये, उनको भुलाया नहीं जा सकता । हम सब संत उनके साथ हैं।

साध्वी ऋतम्भराजी : इस देश के अंदर सबसे बड़ा षड्यंत्र है भारतीय जनता की आस्था का हरण करना । जनता को अपनी धर्मनिष्ठा, गुरुनिष्ठा पर खड़े रहना चाहिए । सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि जिस पर कोर्ट का अभी फैसला नहीं आया, उस पर मीडिया निर्णायक बनकर जो आरोप है वह प्रमाणित हो गया इस तरह का वातावरण निर्मित करता है । इसके पीछे हिन्दू समाज की निष्क्रियता, उदासीनता, पक्षधर होकर प्रबलता से संघर्ष नहीं करना - ये सारे कारण हैं । इन सारी परिस्थितियों के बीच आस्थावान समाज को अपनी दृढ़ निष्ठा के साथ डटे रहना चाहिए।

मैं उम्मीद करती हूँ देश की न्यायपालिका से, विधायिका से, राजनैतिक शक्तियों से, सामाजिक शक्तियों से कि सारे लोग अपनी भूमिका निभायें।
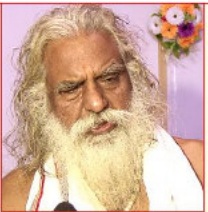
महंत श्री नृत्यगोपालदासजी, अध्यक्ष, श्रीराम जन्मभूमि न्यास : आशारामजी बापू का सारी दुनिया में नाम है और रहेगा । साधु-समाज को बदनाम करने के लिए ये सारी कुचेष्टाएँ की गयी हैं । आशारामजी बापू ने समाज की बहुत सेवा की है, राष्ट्र का कार्य किया है और उनके सभी कार्य प्रशंसनीय हैं।

संत श्री विजय कौशलजी : आशारामजी के साथ अन्याय हो रहा है, उनको छोड़ना चाहिए । सरकार और कोर्ट का जो दायित्व है उसे तत्काल पूर्ण करना चाहिए । मीडिया ट्रायल देश के लिए खतरनाक है, यह बंद होना चाहिए।

श्री रामशरणदासजी, अखिल भारतीय काठिया परिवार : आशारामजी बापू के साथ करोड़ों लोगों की श्रद्धा जुड़ी हुई है, कई गौशालाएँ, गुरुकुल चलते हैं, ऐसे संत-महापुरुषों को फँसाया जा रहा है । इसके लिए सारी जनता को जागरूक होना चाहिए, एक होना चाहिए । सरकार सभी संतों को रिहा करे, हिन्दुओं के धैर्य, विश्वास की परीक्षा न ले ।

स्वामी श्री उत्तमजी, भागवत कथाकार : संत आशारामजी बापू पर लगाये गये आरोप झूठे हैं । मैं बापूजी को जानता हूँ, जिन्होंने लाखों लोगों का नशा छुड़वाया, मांस छुड़वाया, हाथों में माला दी, वेद-पुराण, शास्त्र-सत्साहित्य का प्रचार किया है, जिनके करोड़ों साधक हैं वे ऐसा काम नहीं कर सकते हैं । संत आशारामजी बापू निर्दोष बाहर आयेंगे

श्री श्री १००८ महामंडलेश्वर बालयोगिनी श्री करुणागिरिजी : संत आशारामजी बापू का आदर्श जीवन है । मैं नहीं मान सकती हूँ कि उन्होंने कुछ गलत किया होगा । मीडिया सच्चाई को ही दिखाये ।

अनंतश्री विभूषित १००८ महामंडलेश्वर श्री कम्प्यूटर बाबा : आशारामजी बापू पर नाना प्रकार के आरोप लगे परंतु क्या वे साबित हुए ? नहीं हुए, तो इतने समय तक उनको न छोड़ना यह कुछ-न-कुछ षड्यंत्र है । जमानत सभीको मिलती है तो इन्हें भी मिलनी

महामंडलेश्वर श्री बालमुकुंदाचार्यजी : यह षड्यंत्र है, हम सभी भलीभाँति जानते हैं । संत आशारामजी बापू कितनों को वापस लाये जो दूसरे धर्म की ओर चले गये थे ! वेलेंटाइन डे की जगह माता-पिता की पूजा का कितना अच्छा त्यौहार शुरू किया । उनके गुरुकुल-विद्यालय देखिये, उनकी सेवाएँ देखिये । परमात्मा के न्याय पर विश्वास है । इसी विश्वास के दम पर वे वापस हम सबके बीच नजर आयेंगे ।

आचार्य श्री कौशिकजी : पूज्य बापूजी के खिलाफ कार्य करनेवालों ने उनके प्रति इतना बड़ा अपराध किया है कि उन लोगों को बापूजी भले ही माफ कर दें पर परमात्मा उन्हें कभी माफ नहीं करेगा ।

महामंडलेश्वर श्री श्री १००८ महंत लक्ष्मणदासजी : न्यायपालिका तो आशारामजी बापू को क्लीन चिट देगी-ही-देगी क्योंकि बापू द्वारा कोई अपराध नहीं किये गये हैं, न ही बापू ने किसी शिष्य को उकसाया कि किसी प्रकार का अनर्गल काम करो । संत-समाज भी इस बात को नहीं मानता कि उन्होंने कोई घृणित कार्य किया हो । उन्होंने सद्धर्म पर चलने का ही मार्ग सबको बताया है ।

स्वामी ज्ञानानंदजी, कैलाश टेकरी आश्रम, राजसमंद (राज.) : आशारामजी ने जितने सेवाकार्य पूरे विश्व में किये हैं, उन कार्यों की अगर गिनती की जाय तो बहुत बड़ी सूची तैयार होगी। हमें तो नहीं लग रहा है कि उनके द्वारा जो प्रवृत्तियाँ समाज में की जा रही हैं, उनमें से कोई भी कहीं नकारात्मक प्रभाववाली हो। मैंने ऐसे-ऐसे लोगों को देखा है जो सुबह उठ के दारू से कुल्ला करते थे और बापू के अनुयायी बन गये तो आज वे माला फेर रहे हैं। अनेक लोगों का जीवन परिवर्तित हुआ है।

ऐसे महापुरुष के ऊपर इस प्रकार से घटिया आरोप लगा के उनको प्रताड़ित करना, मैं समझता हूँ इससे भयंकर और कोई विडम्बना इस समाज के लिए नहीं हो सकती।

स्वामी निरंजनजी, पीठाधीश्वर, पुरुषार्थ आश्रम (हरिद्वार) : आशारामजी निर्दोष हैं। वे कहीं से भी दोषी नहीं हैं। जो भी आरोप प्रोपगेंडा (बनावटी आरोपों का उद्देश्यपूर्ण प्रचार) मीडिया चलाती है, बार-बार सुनते-सुनते वह सच लगने लगता है। सरकार को इस मीडिया पर अंकुश लगाना चाहिए।

मझले मोरारी बापू, तुलसी मानस धाम : आशारामजी बापू बहुत अच्छे संत हैं। उन्होंने जितना सनातन संस्कृति का प्रचार किया, उतना दूसरा कोई नहीं कर पाया। सत्यता कभी छुपती नहीं है। चाहे प्रज्ञाजी की तरफ से मानो या आशारामजी बापू की तरफ से मानो, जो भी है वह तो प्रकट होकर सामने आ रहा है। हाँ, सत्य को विलम्ब हो सकता है लेकिन सत्य कभी झूठ नहीं होता।

महामंडलेश्वर श्री भैयादासजी : जो धर्म-विरोधी हैं उन्होंने आशाराम बापूजी को राजनीति के तहत फँसाया है। वास्तव में जो एक संत के कार्य होने चाहिए वे सारे कार्य उन्होंने किये हैं। आज उनके अच्छे कामों को मीडिया एक बार भी नहीं दिखा रहा है। कितने अच्छे काम किये उन्होंने ! आदिवासी क्षेत्रों में, जहाँ कभी कोई जा नहीं सकता था, वहाँ उन्होंने विद्यालय बनवाये। हिन्दू संस्कृति को किस तरह से उन्होंने जागृत किया है वह कोई नहीं बताता।

महामंडलेश्वर श्री श्री १००८ स्वामी श्री रविशरणानंद गिरिजी, महामंडलेश्वर स्वामी राधाप्रसाद देव जू, श्री मोहिनी बिहारी शरणजी, पंडित विजयशंकर मेहताजी, आर्ट ऑफ लिविंग से स्वामी भवतेशजी, पंचवटी आश्रम (नासिक) से महंत बाबा जयरामदासजी, अखंड परम धाम (उत्तरकाशी) से साध्वी रंजना देवीजी, आचार्य अमरनाथदासजी (ओड़िशा) सहित कुम्भ में पधारे अनेकानेक संतों ने पूज्य बापूजी के समर्थन में आवाज उठायी।

उज्जैन कुम्भ में मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को वैदिक सनातन धर्म एवं राष्ट्र रक्षा मंच, संस्कृति रक्षक संघ, भारत जागृति मोर्चा आदि संगठनों द्वारा पूज्य बापूजी के केस से अवगत कराया तथा पूज्य बापूजी की निर्दोषता से संबंधित दस्तावेज भी सौंपे गये।

गतांक की 'ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी' के उत्तर

(१) सत्संग (२) पीपल (३) शीतली प्राणायाम (४) गुरुमंत्र के जप (५) कृत्रिम हानिकारक रसायनों

करीब ८ साल बाद साध्वी प्रज्ञा को मिली क्लीन चिट

हिन्दू संतों को झूठे आरोपों में फँसाकर हिन्दुओं की आस्था और भारतीय संस्कृति को नष्ट करने के घृणित षड्यंत्रों का खुलासा अब समाज के सामने तेजी से होता जा रहा है । अनेक संतों को सुनियोजित षड्यंत्रों में फँसाकर उन पर अनर्गल, मनगढ़ंत आरोप लगाये गये, विभिन्न प्रचार-प्रसार माध्यमों ने जनता की नजरों में उन्हें दोषी सिद्ध करने के लिए बीसों उँगलियों का जोर लगाया पर आखिरकार सब आरोप झूठे ही साबित हुए । इसी शृंखला में साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर भी जुड़ गयी हैं ।

वर्ष २००८ में हुए मालेगाँव बम धमाकों के मामले में गिरफ्तार किये गये साध्वी प्रज्ञा सहित अन्य पाँच आरोपियों को राष्ट्रीय जाँच एजेंसी (NIA) ने क्लीन चिट दी है । एनआईए ने अदालत में आरोप-पत्र दाखिल करते हुए इस बात को स्वीकार किया है कि साध्वी प्रज्ञा के खिलाफ केस चलाने के लिए पर्याप्त सबूत उपलब्ध नहीं हैं । लगभग आठ साल के जेल के दौरान इन हिन्दू साध्वी द्वारा रिमांड और कस्टडी में सही गयी क्रूरता, बर्बरता, सभी अमानवीय प्रताड़नाएँ आखिर फिजूल अत्याचार साबित हुईं ।

साध्वी प्रज्ञा सहित अन्य आरोपियों को महाराष्ट्र के आतंकवाद निरोधी दस्ते (ATS) द्वारा MCOCA जैसे कड़े कानून के तहत जेल में बंद रखा गया था, जिसे एनआईए ने गलत बताया है । अपनी जाँच में एनआईए ने ATS के तरीकों को शंकास्पद और अविश्वसनीय भी बताया ।

एक समाचार पत्र में छपे साध्वी प्रज्ञा के बयान में वे अपनी आपबीती बताते हुए कहती हैं कि एक महिला होते हुए भी उन्हें २४ दिनों तक पुरुष पुलिस के जत्थे द्वारा बुरी तरह प्रताड़ित किया गया । साध्वी के अनुसार एटीएस मालेगाँव बम धमाकों में साध्वी का हाथ है - ऐसा उन्हींके द्वारा स्वीकार कराना चाहती थी । साध्वी प्रज्ञा के शरीर के निचले भाग में लकवा (पैरालिसिस) हो गया है, जिसका कारण वे पुलिस द्वारा दी गयी प्रताड़नाएँ बताती हैं । साथ ही उन्हें अब कैंसर भी हो गया है ।

साध्वी ने कहा कि ''मैंने सुना कि मुझे क्लीन चिट मिली है । लेकिन ऐसा ८ साल बाद हुआ । न्याय मिलने में देर होना खुद ही एक अन्याय है ।''

आज हिन्दू समाज व समस्त धर्मप्रेमियों के साथ देश के न्यायप्रेमियों व सज्जनों को जागृत और सतर्क होना होगा । आखिर कब तक साधु-संतों के साथ अमानवीय बरताव करके धार्मिक आस्था के साथ खिलवाड़ होता रहेगा ? संत श्री आशारामजी बापू जैसे ७९ वर्षीय बुजुर्ग संत, जिनके विश्वभर में करोड़ों अनुयायी हैं, उनको भी गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने यातनाएँ दी थीं (पढ़ें सितम्बर २०१३ के 'ऋषि प्रसाद' में 'पूज्य बापूजी को बदनाम करने का सुनियोजित षड्यंत्र') । पूज्य बापूजी को भी षड्यंत्र में फँसाया गया है । पिछले पौने तीन वर्षों से वे जेल में हैं । देर-सवेर तो सत्य उजागर होगा और जब होगा तब केवल एक ही खटक रह जायेगी । जिन ब्रह्मज्ञानी महापुरुष के कुछ मिनटों के संग से भी लोगों के कष्टों, तापों, दुःखों का अंत होने लगता है तथा स्वास्थ्य, आनंद, शांति व परमात्म-ज्ञान की प्राप्ति होती है, ऐसे महापुरुष के अमूल्य जीवनकाल के इतने वर्ष व्यर्थ में बिगड़ने से समाज को अकल्पनीय क्षति हुई है; आखिर इसकी भरपाई कौन कर पायेगा ? कैसे कर पायेगा ?

(श्री रविशेखर सिंह, विधि सलाहकार)

ज्ञानरूपी खड्ग की प्राप्ति का मार्ग

'श्रीमद् एकनाथी भागवत' में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं :

साधु-संतों की सेवा करनी चाहिए। साधुओं में भी परिपूर्ण साधुत्व केवल सद्गुरु के ही पास होता है इसलिए उनके चरणों की सेवा करनी चाहिए। उनके सत्संग-सेवादि से संसार-बंधन टूटता है क्योंकि सद्गुरु ही सच्चे साधु और सज्जन होते हैं। उनके मधुर (रसमय) आत्मवचन श्रुतियों के ही अर्थ का उपदेश करते हैं, जिससे ज्ञानरूपी खड्ग की प्राप्ति होती है, जिसे बुद्धि के हाथ में दिया जा सकता है। उसी शस्त्र को फिर वैराग्य और नैराश्य (उपरामता) रूपी पत्थर पर घिसकर तेज बनाना चाहिए और उसे धैर्य का मजबूत हत्था लगा के अंतःकरण में संशयरहित होकर सावधानी से पकड़ना चाहिए। अपनी जी-जान लगाकर उस शस्त्र से अभ्यास करना चाहिए और फिर बराबर निशाना साध के देहाभिमान को काट डालना चाहिए।

जो सभी संशयों का मूल गड्ढा है, जिससे देह-दुःख उत्पन्न होता है, जिसके कारण सदा विषयों का व्यसन लगा रहता है, जो काम और क्रोध का पोषण करता है, जो तीनों गुण बढ़ाता है, जो शुद्ध आत्मा में जीवभाव लाता है, जिसके कारण इस जीव को दुर्निवार (जिसका निवारण करना बहुत कठिन है ऐसा) जन्म-मरण लगा रहता है, जो सभी अनर्थों का दाता है, ममता जिसकी लाड़ली बेटी है - ऐसा यह अभिमान है। मायारूपी माँ ही ममता को पालती-पोसती है और इसीके सामर्थ्य पर यह भी इतना उन्मत्त रहता है। इसलिए वीर को युद्धभूमि में यह तेज धारवाला शस्त्र लेकर धैर्यपूर्वक सावधान हो के इतने जोर से वार करना चाहिए कि एक ही झटके में माया, ममता और अभिमान - इन तीनों के ही टुकड़े-टुकड़े हो जायें।

भोग्य, भोग और भोक्ता; कर्म, कार्य और कर्ता; ध्येय, ध्यान और ध्याता - इस त्रिपुटी को जड़-मूल से काट डालना चाहिए। 'मैं हूँ', 'मैं कौन हूँ ?' अथवा 'मैं ही ब्रह्म हूँ' ऐसा अहंभाव भी काट डालने से साधक मुझ परमात्म-पद की प्राप्ति करता है। इस प्रकार वह स्वयं ही ब्रह्मस्वरूप हो जाता है। अब आप कहेंगे कि 'आपने यह जो उपाय बताया है वह केवल शब्दों का खेल है। केवल बातों का बड़ा प्रलाप करने से अहंकार कैसे नष्ट होगा ? यदि शब्दों से ही अभिमान नष्ट होता तो बड़े-बड़े विद्वान अभिमान में क्यों डूब मरते ? अभिमान (अहंकार) अगर प्रत्यक्ष दिखाई देता तो तत्काल दौड़कर उसे काट डालते लेकिन वह तो सर्वथा अतर्क्य है। अतः केवल शब्दों से वह नष्ट नहीं होगा। उसी प्रकार आत्मा का जो साक्षात्कार होता है वह भी कोई शब्दों का खेल नहीं है।' तो इस शंका का समाधान सुनो। जो सदा सावधान रहकर अनन्य भाव से मेरा भजन करता है अथवा मेरी ही भावना से जो सद्गुरु के पवित्र चरणों की सेवा करता है; मुझमें और सद्गुरु के स्वरूप में कल्पांत

में भी भेद नहीं है - इस अभेदभाव से जो मेरा भजन करता है, उसे सहज ही ज्ञान प्राप्त होता है। स्वाभाविक रूप से मेरे भजन में मग्न रहने के कारण उसे ज्ञानरूपी खड्ग की प्राप्ति होती है। जिस शस्त्र की धार से काल का भी हृदय काँप उठता है, वह शस्त्र अपने-आप उसके हाथ लग जाता है। उस शस्त्र के भय से ही माया, ममता और अभिमान इस जीव को छोड़कर पूरी तरह भाग जाते हैं और अहंता, ममता तथा अविद्या का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। इस प्रकार उत्तम भक्तिभाव से मेरा जो भजन करने से इतना ज्ञान प्राप्त होता है, उसके बारे में अब मन ऐसी शंका करेगा कि 'यह भजन कहाँ किया जाय ? हे भगवन् ! तुम्हारा स्वरूप अतर्क्य, अत्यंत सूक्ष्म और निर्गुण है। अतः तुम्हारा भजन करने के लिए कौन-सा स्थान है यही मेरी समझ में नहीं आता।' अगर मन में ऐसी कल्पना आती है तो मैं भजन का अति सुलभ स्थान बताता हूँ। करोड़ों पर्वतों को पार किये बिना, गिरि-गुफाओं में गये बिना, कहीं दूर जाकर परिश्रम किये बिना ही जहाँ मेरी सदा सर्वदा भेंट होती है, जहाँ मैं पुरुषोत्तम रहता हूँ, केवल वही भजन का स्थान निरुपम (अतुलनीय) है। मेरी प्राप्ति के लिए वह भक्तों का अत्यंत सुलभ ऐसा विश्रामस्थान है। सर्व सुखों का विश्रामस्थान जो आत्माराम है वह अपने हृदय में सदा समभाव से रहता है। यहीं उसका प्रेम से भजन करना चाहिए।

ब्रह्मा से लेकर मक्खी तक सबके हृदय में एक मैं ही हूँ - यह जो जानता है वही भाग्यशाली है और मेरी प्राप्ति के लिए यही भजन उत्तम है। जिस मुझ हृदयस्थ के तेज से मन-बुद्धि आदि कार्य करते हैं, जिस मुझ स्फुरण की स्फूर्ति से पूर्ण ज्ञान पैरों पर लोटता है, उस मुझ हृदयस्थ के प्रति कोई भी भजन में तत्पर नहीं होता और बाह्य उपायों से व्यर्थ थककर लोग अनेक प्रकार के संकटों में गिर जाते हैं। ऐसे लोगों में कोई विरला ही महाभाग्यशाली होता है और वही मुझ हृदयस्थ का विवेक कर निश्चयपूर्वक मेरे भजन में लग जाता है। मुझ हृदयस्थ का भजन करने पर जिस ज्ञान से अधःपतन नहीं होता ऐसा मेरा सम्पूर्ण वैराग्ययुक्त आत्मज्ञान वह प्राप्त करता है। उस ज्ञान के भय से ही अभिमान भाग जाता है। वह अपना ज्ञान मैं उन्हें देता हूँ जो सदा-सर्वदा मुझ हृदयस्थ का भजन करते हैं। जिस ज्ञान की सिद्धि से समस्त आधि-व्याधि दूर हो जाती हैं, तन-मन-वचन पवित्र हो जाते हैं तथा समस्त संशय भाग जाते हैं, उस ज्ञान से भक्त आत्मपद प्राप्त करते हैं।

('श्रीमद् एकनाथी भागवत' से)

संत-सम्मेलन में उठी बापूजी की रिहाई की माँग

उज्जैन कुम्भ में हुए विराट संत-सम्मेलन में संतों-महंतों एवं संगठन प्रमुखों ने संतों का उत्पीड़न रोकने तथा संस्कृति-विरोधी शक्तियों का सामना करने के लिए समस्त हिन्दू संस्थाओं को एकजुट होकर कार्य करने का आह्वान किया।

सम्मेलन में उपस्थित रामकथाकार आचार्य श्री जितेन्द्रजी, कैलाश आश्रम (ऋषिकेश) के स्वामी प्रशांतानंदजी, मलूकपीठाधीश्वर राजेन्द्रदासजी के शिष्य श्री रामदासजी, श्री बालकदासजी, महामंडलेश्वर श्री ब्रह्मदेवजी, भागवत कथाकार संत श्रीदासजी, महामंडलेश्वर श्री सुनील शास्त्रीजी, भागवत कथाकार श्री श्रवणरामजी, महामंडलेश्वर स्वामी प्रेमानंदजी, हिन्दू जनजागृति समिति के राष्ट्रीय मार्गदर्शक श्री चारुदत्त पिंगलेजी, वैदिक सनातन धर्म एवं राष्ट्र रक्षा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. गंगाराम तिवारीजी, महानिर्वाणी अखाड़े के महंत श्री रामगिरि बापू आदि संतों ने पूज्य बापूजी पर हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठायी तथा शीघ्र रिहाई की माँग की।

सत्त्वगुण का विकास जीवन में लाये ज्ञान-प्रकाश

- पूज्य बापूजी

मैं आपको बहुत ऊँची चीज बताता हूँ - सत्त्वगुण की वृद्धि। एक गुण की वृद्धि करने से आपके जीवन में न जाने कितने सद्गुण आ जायेंगे और उन सद्गुणों से आपका तो भला होगा, आप जिनके सम्पर्क में आओगे वे भी निहाल होने लगेंगे।

सत्त्वात्सञ्जायते ज्ञानं... (गीता : १४.१७)

सत्त्वगुण से परमात्मा का ज्ञान, परमात्मा का साक्षात्कार हो जाता है। सत्त्वगुण मनुष्य को ईश्वर के साथ एकाकार करने का सामर्थ्य रखता है।

सत्त्वगुण बढ़ गया तो फायदे बहुत हैं। इसे कोई भी बढ़ा सकता है। इसे बढ़ाया तो दूसरे गुणों और प्रमाण-पत्रों की ऐसी-तैसी। सत्त्वगुण बढ़ाने के लिए १० साधन हैं।

सत्त्वगुण बढ़ाने के १० साधन

(१) माला पर जप किया, थोड़ा ॐकार का गुंजन किया, फिर चलते-फिरते भगवान के नाम का जप सत्त्वगुण बढ़ाने में बहुत मदद करेगा। जप करें तो श्वासोच्छ्वास से भी कर सकते हैं।

(२) सबमें भगवद्भाव करना कि सबकी गहराई में भगवान हैं।

(३) किसीका अहित न सोचना, न करना।

(४) निंदा, चुगली नहीं करना।

(५) क्रोध आये तो क्रोध को देखा कि 'क्रोध किसको आता है ?' खाना चबा-चबाकर खायें २०-२५ मिनट तक, क्रोध नियंत्रित रहेगा। फिर भी क्रोध आता है तो उँगलियाँ ऐसे बंद करें कि नाखून हथेलियों की गद्दी से लगें, क्रोध नियंत्रित होगा। ३४ मिनट क्रोध में १ औंस (२८.३५ ग्राम) खून जल जाता है और स्वभाव खिन्न होता है। गर्जना करके अनुशासित करना अलग बात है और अंदर से तपकर, क्रोधी हो के किसीका बुरा करना या अपना खून सुखाना - यह मूर्खता है।

(६) निरभिमानिता। निरभिमान होकर सेवाकार्य करना।

(७) जो कुछ खायें-पियें, भगवान का सुमिरन करके उसको प्रसाद बना दें।

(८) भगवान का अपने प्रति अनुग्रह मानना कि 'भगवान की कृपा है।'

(९) प्रार्थना।

(१०) सात्त्विक खानपान। राजसी, तामसी भोजन, जैसे - लहसुन, शराब, बासी खुराक, मासिक धर्मवाली महिला के हाथ का बना भोजन रजोगुण-तमोगुण बढ़ाता है, सत्त्वगुण की ऊँचाई से गिरा देता है। सात्त्विक खुराक खाना, सात्त्विक शास्त्र पढ़ना, सात्त्विक स्थान में रहना।

सत्त्वगुण बढ़ने के लाभ

आप आनंद में रहेंगे, प्रीतिवान बन जायेंगे, आपको सब स्नेह करेंगे। आपका मन और इन्द्रियाँ नियंत्रण में रहेंगे और प्रसन्नता आपके घर का खजाना होगी। आप सुख के लिए पान-मसाला, पिक्चर की गुलामी अथवा इधर-उधर भटकने की मजदूरी नहीं करेंगे, अंतरात्मा में सुखी रहेंगे। आपका रक्त शुद्ध हो जायेगा, रोग भाग जायेंगे। संतोष, श्रद्धा, सरलता, क्रोध का अभाव, क्षमा का सद्गुण आपके घर की मिल्कियत हो जायेंगे। आप देखते रहें प्यार से तो हिंसक प्राणी भी आपको देखकर हिंसा का स्वभाव भूल जायेंगे।

सर्प विषैले प्यार से वश में बाबा तेरे आगे।

कैसी भी परिस्थिति आये, धैर्य आपका स्वभाव हो जायेगा। समता भी आपके हृदय में रहेगी। आपका आचरण सदाचरण हो जायेगा। आपके मन में अथवा व्यवहार में लोलुपता नहीं रहेगी कि 'फलाना आदमी दया कर दे...।' लोलुपता भी बड़ा दुर्गुण है। लोलुपता और मेरा कभी मेल नहीं हुआ, घर छोड़ा तब भी। भूख लगी तो सोचा, 'हम नहीं जायेंगे।

जिसको गरज होगी आयेगा, सृष्टिकर्ता खुद लायेगा।'

उस प्यारे ने क्या-क्या व्यवस्था की, खिलाया। तो अयाचक, अलोलुप स्वभाव बन जायेगा। हृदय में भ्रम नहीं होगा कि 'अरे, यह क्या है ? समझ में नहीं आता।' स्पष्ट समझ में आयेगा। इष्ट-अनिष्ट के संयोग-वियोग का प्रभाव आपके ऊपर नहीं पड़ेगा। दान-पुण्य आपसे सहज में होगा। मन सहज में वश होगा। कोई चाह या इच्छा नहीं रहेगी, परोपकार, दयालुता आपका स्वभाव बन जायेगी। सत्त्वगुणी में त्याग की भावना रहती है। सात्त्विक व्यक्ति का संकल्प, दुआ फलती है, जैसे युधिष्ठिर आदि की।

सत्त्वगुण से इतने सारे लाभ होते हैं। हम ध्यान नहीं देते हैं न, इसलिए इन ऊँचे लाभों से वंचित रह जाते हैं।

(क्रमशः)

लता आसन

लाभ : (१) रक्तवाहिनी नाड़ियाँ और आँतें शुद्ध एवं बलवान हो जाती हैं।

(२) चर्मरोग तथा नाक, कान, मुख, नेत्र आदि के विकार दूर होते हैं।

(३) पीठ और कमर लचीली हो जाती है और भूख अच्छी लगती है।

विधि : भूमि पर पीठ के बल लेट जायें। अब दोनों पैरों को ऊपर उठाकर पीछे की ओर ले जा के हलासन के समान आकृति बनायें। फिर जहाँ तक हो सके पैरों को दायें-बायें फैला दें। दोनों हाथों को भी दायें-बायें फैला दें। दोनों भुजाएँ भूमि से सटी रहें। जितना अंतर दोनों पैरों में हो, उतना ही अंतर दोनों हाथों में भी होना आवश्यक है।

गुरुआज्ञा-पालन का महत्त्व

गुरु की आज्ञाओं के प्रति लापरवाही यह स्वयं से दुश्मनी है। जैसे किश्ती में छोटा-सा छिद्र भी पूरी किश्ती को नष्ट करने के लिए पर्याप्त होता है, वैसे ही गुरुआज्ञा के प्रति थोड़ी भी लापरवाही साधक के पतन हेतु पर्याप्त है। कभी-कभी गुरु ऐसे आदेश दे देते हैं जो शिष्य के मस्तिष्क के भीतर नहीं उतरते हैं। ऐसा क्यों होता है ? क्योंकि श्रद्धा की कमी है। जहाँ श्रद्धा की कमी होगी वहीं गुरुआज्ञा के प्रति लापरवाही होगी। छोटी-से-छोटी गुरुआज्ञा भी शिष्य के कल्याण के लिए बड़ी सीढ़ी बनती जाती है लेकिन प्रश्न यह है कि हम गुरुआज्ञा-पालन के कल्याणकारी प्रभाव को जानकर उसमें कितना डट पाते हैं ?

गुरुकृपा ने अड़बंग को अड़बंगनाथ बना दिया

एक बार गोरखनाथजी व उनका शिष्य यात्रा करते हुए भामा नगर के निकटवर्ती स्थान पर तेज गर्मी के कारण वृक्ष के नीचे बैठ गये । पास में ही मणिक नाम का एक किसान अपने खेत में हल चलाने में व्यस्त था । वह भोजन करने के लिए एक वृक्ष के नीचे जा बैठा । गोरखनाथजी व उनका शिष्य उसके पास पहुँचकर 'अलख-अलख' कहने लगे । किसान प्रणाम करते हुए बोला : "साधु बाबा ! आप लोग कौन हैं ? क्या चाहते हैं ?"

गोरखनाथजी : "हम योगी-यति हैं । हमें भूख लगी है ।"

"आप ठीक समय पर आये हैं । लीजिये, इन्हें खा लीजिये ।"

भोजन से तृप्त होकर गोरखनाथजी उसका नाम पूछने लगे तो मणिक ने कहा : "क्या करोगे नाम जानकर ? भोजन मिल ही गया, अब अपना रास्ता देखो ।"

गोरखनाथजी बोले : "अच्छा भाई ! मत बताओ । किंतु तुमने हमें भोजन से तृप्त किया है इसलिए हमसे कुछ माँग ही लो । जो चाहोगे वही मिलेगा ।"

मणिक हँस पड़ा : "अरे महाराज ! जाओ । तुम स्वयं तो दर-दर की भीख माँगते हो और हमसे कहते हो कि कुछ ले लो ! यह कैसी अनोखी बात करते हो ?"

"अरे, माँगो तो सही, हम सब कुछ दे सकते हैं ।"

मणिक तीव्र स्वर में बोला : "अब आप मुझ पर कृपा करिये और यहाँ से पधारिये ।"

गोरखनाथजी समझ गये कि यह व्यक्ति बहुत अड़बंग (हठी) है इसलिए उसके कल्याण के लिए उन्होंने कहा : "अच्छा तो मुझे एक वचन दे दो ।"

"माँगो, क्या चाहते हो ?"

"इतना ही दो कि अब से अपनी इच्छा के विपरीत कार्य किया करो । करोगे ऐसा ?"

"अजी, यह भी कोई बड़ी बात है ? माँगने बैठे तो क्या ऊटपटांग माँगा ! लगता है तुम कोई मजाकिया हो या कोई धूर्त । तुम्हारा कुछ और ही प्रयोजन प्रतीत होता है ।"

"हम तो अभी जा रहे हैं किंतु यह बताओ कि तुमने हमारी माँगी बात मान ली न ?"

वह झल्लाया : "मान ली, मान ली... मेरा पीछा तो छोड़ो किसी प्रकार !"

जब गोरखनाथजी व उनके शिष्य चले गये, तब मणिक के चित्त में विचार उठा कि 'जो मुझे कहना था सो कह दिया, अब उनका कहा भी मानना चाहिए ।'

भूख लगती तब वह पानी पीकर रह जाता । प्यास लगती तब कुछ खा लेता । सोने की इच्छा होती तो वह जागता, खड़े होने की इच्छा होती तो लेट या बैठ जाता । इस प्रकार सभी कार्य अपनी इच्छा के विरुद्ध करने से उसके स्वास्थ्य पर बड़ा विपरीत प्रभाव पड़ा । उसका शरीर सूखने लगा । उसकी धर्मपत्नी व अन्य परिवारवालों ने बहुत समझाया कि "यह हठ छोड़ दो ।" किसीके भी समझाने-बुझाने का उस पर कुछ भी प्रभाव न हुआ

और वह अपने वचन पर बराबर दृढ़ रहा । इस प्रकार उसे बारह वर्ष व्यतीत हो गये ।

गोरखनाथजी बदरिकाश्रम से यात्रा करते हुए लौट रहे थे । तभी उन्होंने अपने गुरु मत्स्येन्द्रनाथजी से निवेदन किया कि ''मणिक किसान के पास से होते हुए चलेंगे ।'' मत्स्येन्द्रनाथजी, गोरखनाथजी और चौरंगीनाथजी - तीनों ही उसके पास आये ।

गोरखनाथजी ने पूछा : ''भाई ! ऐसे निस्तेज, रोगी और दुर्बल क्यों हो रहे हो ?'' मणिक उन्हें देखते ही पहचान गया ।

''यह सब तुम्हारी ही करामात है साधु बाबा ! आपको जो वचन दिया है उसके पालन करने का यह परिणाम हुआ ।''

गोरखनाथजी को मन-ही-मन बड़ी प्रसन्नता हुई कि 'यह अभी तक अपने वचन पर अडिग है । इसे दीक्षा दी जाय । परंतु यदि इसको कहूँगा तो उलटा ही करेगा ।' उन्होंने कहा : ''अच्छा भाई ! अब तेरा कष्ट दूर हो जायेगा परंतु तू मुझे अपना शिष्य बना ले और गुरुमंत्र दे ।''

वह बोला : ''मैं गुरुमंत्र को क्या जानूँ और न गुरु ही बनूँगा । मैं तो यह चाहता हूँ कि तुम मुझे गुरुमंत्र दो और अपना शिष्य बना लो ।''

''अरे, यह कैसी बातें करता है ? तुझमें ऐसे बहुत गुण हैं, जो हममें नहीं हैं । इसलिए हम तुझे अपना गुरु बनाना चाहते हैं ।''

''नहीं जी, मुझमें कोई गुन-बुन नहीं हैं । मैं ही तुम्हारा चेला बनूँगा । अब देर मत करो, शीघ्र ही गुरुमंत्र दे डालो ।''

गोरखनाथजी ने उसे मंत्रदीक्षा देकर अपना शिष्य बना लिया । उसके सिर पर हाथ फेरा तो उसका रोग और निर्बलता नष्ट हो गयी, स्वास्थ्य एवं सूझबूझ बढ़ी और वह गोरखनाथजी के प्रति श्रद्धा-भक्ति से भर गया । गोरखनाथजी ने मत्स्येन्द्रनाथजी की ओर संकेत करके कहा कि ''ये हमारे पूज्य गुरुदेव हैं, इन्हें प्रणाम करो ।'' उसने तुरंत मत्स्येन्द्रनाथजी के चरणों में दंडवत् प्रणाम किया और उन्होंने उसे आशीर्वाद देकर नाथ पंथ की दीक्षा दी । उसके अड़बंग (हठी) होने के कारण उसका नाम 'अड़बंगनाथ' रखा गया । उसके पश्चात् गोरखनाथजी ने उसे अनेक विद्याओं में पारंगत किया और नाथ योगी बना दिया ।

इन तिथियों का लाभ लेना न भूलें

२६ जून : रविवारी सप्तमी (दोपहर २-२१ से २७ जून सूर्योदय तक)

१ जुलाई : योगिनी एकादशी (बड़े-बड़े पातकों का नाश करनेवाला तथा महापापों को शांत करके महान पुण्य देनेवाला व्रत । ८८,००० ब्राह्मणों को भोजन कराने का फल मिलता है ।)

४ जुलाई : सोमवती अमावस्या (सूर्योदय से शाम ४-३२ तक)

१० जुलाई : रविवारी सप्तमी (दोपहर ३-०९ से ११ जुलाई सूर्योदय तक)

१५ जुलाई : देवशयनी एकादशी (यह व्रत महान पुण्यमय, स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदान करनेवाला, सब पापों को हरनेवाला है), चतुर्मास व्रतारम्भ (चतुर्मास में भगवान विष्णु के सामने खड़े होकर 'पुरुष सूक्त' का पाठ करने से बुद्धिशक्ति बढ़ती है ।)

१६ जुलाई : संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से सुबह १०-१६ तक)

१९ जुलाई : गुरुपूर्णिमा (गुरु के दर्शन व मानस-पूजन से वर्षभर के सभी व्रत-पर्वों का पुण्यफल फलित होता है), 'ऋषि प्रसाद' जयंती

तीन प्रकार के शिष्य

- पूज्य बापूजी

तीन प्रकार के भक्त या शिष्य होते हैं। एक होते हैं आम संसारी भक्त, जो गुरुओं के पास आते हैं, उपदेश को सुनते हैं, कथा-वार्ताएँ सुनते हैं, जप-ध्यान करते हैं, कुछ-कुछ उनके उद्देश्यों को अपने जीवन में लाने का प्रयास करते हैं । ये सामान्य निगुरे आदमी से उन्नत तो होते जाते हैं लेकिन इससे भी दूसरे प्रकार के साधक ज्यादा नजदीक पहुँच जाते हैं, जिन्हें कहा जाता है अंतेवासी, आश्रमवासी । ये गुरु के आदर्शों को, उद्देश्यों को आत्मसात् करके समाज तक फैलाने की दैवी सेवा खोज लेते हैं।

जैसे महात्मा बुद्ध के सम्पर्क में आने से कई लोग भिक्षुक और भिक्षुणी हो गये। ऐसे लोग वर्षों तक संतों का सान्निध्य पाकर अपने चित्त की जन्म-जन्मांतरों की जो मैल है, पुरानी आदतें हैं, पुराने आकर्षण-विकर्षण हैं, उनको मिटाकर आगे बढ़ना चाहते हैं। ऐसे शिष्य सैकड़ों, हजारों में हो सकते हैं। आम भक्त तो लाखों, करोड़ों में भी हो सकते हैं।

तीसरे शिष्य होते हैं शक्तिवाहक; शक्तिस्वरूप से एक हो जाने में, गुरु के आत्मिक शक्ति के अनुभव को झेलने की क्षमता रखनेवाले शिष्य। ये कभी-कभार कहीं-कहीं पाये जाते हैं।

श्री रामकृष्ण परमहंसजी के पास हजारों-लाखों लोग आये-गये होंगे, कई लोग आश्रमवासी भी रहे होंगे लेकिन नरेन्द्र (जो गुरुकृपा से स्वामी विवेकानंद बने), नाग महाशय आदि कुछ ही शिष्य श्री रामकृष्ण के अनुभव को अपना अनुभव बनाने में सफल हो गये । पूरे समर्पित, पूरी आत्मशक्ति को झेलने की क्षमताएँ ! हालाँकि स्वामी विवेकानंद प्रचार-प्रसार के कारण अधिक प्रसिद्ध हुए।

वैसे देखा जाय तो शिष्यों के कई प्रकार हैं लेकिन शिष्यों के ३ प्रकार एक संत ने अपने नजरिये से ऐसे भी बताये हैं :

एक होते हैं पत्थर की नाईं । जैसे सरोवर में पत्थर आ गया तो उसकी तपन मिटी और वह शीतल हो गया, गीला-सा भी दिखता है लेकिन जितनी देर वह सरोवर में है उतनी देर ठंडा और गीला दिखता है। सरोवर से बाहर आ गया कड़ाके की धूप में तो वह अपनी शीतलता और नमी भुलाकर पुनः पूर्ववत् हो जायेगा । ऐसे ही आम आदमी जो निगुरे हैं अथवा कुछ ऐसे लोग होते हैं जैसे कामी, क्रोधी, लोभी, कठोर, स्वार्थी, फिर भी वे सत्संग के वातावरण में आ गये तो वातावरण के प्रभाव से पावन, पवित्र होते हैं लेकिन उसका मूल्यांकन नहीं करते हैं, जाँच-पड़ताल के भाव से आये या और किसी भाव से आये तो फिर थोड़े समय में उनका चित्त पूर्ववत् संसारी भावों में आ जाता है।

दूसरे होते हैं वस्त्र की नाईं । जैसे वस्त्र सरोवर में भिगो दिया, अब सरोवर से बाहर भी आया तो तुरंत सूखेगा नहीं, सरोवर की शीतलता और नमी अपने में सँजोये रखेगा । सूर्य की किरणें और हवाएँ जब जोर मारेंगी तब वे धीरे-धीरे सरोवर का प्रभाव हटा सकेंगी, मिटा देंगी । ऐसे ही जो नामदान लेते हैं, जिन्होंने जीवन में कोई व्रत-नियम लिया है उन्हें बाहर की तपन, बाहर के आकर्षण-विकर्षण जल्दी पुरानी स्थिति में नहीं लाते, समय लगता

है लेकिन सयाने शिष्य पुरानी स्थिति में, हलकी स्थिति में आने के पहले ही किसी-न-किसी त्यौहार, किसी-न-किसी निमित्त - चाहे पूनम-व्रत का निमित्त हो, चाहे सत्संग का निमित्त हो, चाहे सेवा का निमित्त हो, फिर गुरु के दर्शन करके अपना हृदय भगवद्भाव, भगवद्ध्यान और भगवदीय सेवा से सराबोर करके मधुर बना लेते हैं।

तीसरे शिष्य होते हैं मिश्री जैसे। मिश्री सरोवर में डाल दी, अब वह सरोवर में पड़े-पड़े पानी से मिल जायेगी। अब खुद मिश्री को डालनेवाला भी अगर पानी से मिश्री को अलग करना चाहे तो मुश्किल है। ऐसे ही जो पूर्ण तैयार होकर आते हैं, वे अपने अहं-मम को, अपनी चिंता-कामनाओं को परमात्म-सत्संग में और गुरु के अनुभव में ऐसा न्योछावर कर देते हैं कि फिर उनकी वे कामनाएँ, उनके वे अहंकार, वे ईर्ष्याएँ, वे दोष अब दिन-रात खोजने पर भी नहीं मिलते।

भंग भसूड़ी सुरापान उतर जाये प्रभात ।
नाम नशे में नानका छका रहे दिन-रात ।।
ऐसे पुरुष नाम नशे में, ईश्वरीय सुख में, आत्मिक आनंद में छके रहते हैं ।

नानकजी ने भक्तों को संदेश दिया है :

साथि न चालै बिनु भजन बिखिआ सगली छारु ।।
हरि हरि नामु कमावना नानक इहु धनु सारु ।।

भजन के बिना दूसरी कोई वस्तु मनुष्य के साथ नहीं जाती। सारी माया राख के समान है। हे नानक ! हरिनाम की कमाई ही सबसे अच्छा धन है।

कितना भी धन इकट्ठा कर दिया, कितनी भी सुविधाएँ भोग लीं तो भी अंत में शरीर राख में मिल जायेगा। अंतरात्मा का सुख, ज्ञान और माधुर्य ही सच्चा धन है।

मन मेरे तिन की ओट लेहि ।।
मनु तनु अपना तिन जन देहि ।।

अगर तीसरे प्रकार का उत्तम साधक बनना है तो उस ईश्वर की, उस रब की अनुभूति करने के लिए अनुभवसम्पन्न महापुरुषों के अनुभव की तू ओट (शरण) ले। अपना मन और तन उन्हींके अनुभव में लगाओ, उन्हींकी यात्रा में लगाओ।

शरीर राख में मिल जाय उसके पहले तेरा अहं उस सत्संगरूपी, संतरूपी अमृत में मिला दे, मिश्री जैसे पानी में मिल जाती है, ऐसे ही तेरा मन मिला दे भैया !

जिनि जनि अपना प्रभू पछाता ।।
सो जनु सरब थोक का दाता ।।

जिन्होंने अपने प्रभुतत्त्व का अनुभव किया है, जो देह में रहते हुए भी देह को 'मैं' नहीं मानते हैं, मन के साथ एकाकार हुए दिखते हैं फिर भी मन के द्रष्टा हो गये हैं, बुद्धि के साथ एकाकार होकर कुशलता से व्यवहार करते हैं लेकिन फिर भी बुद्धि के निर्णय बदलते हैं, उनकी बदलाहट को जो जानता है उस अद्वैत ब्रह्म में एकाकार हुए हैं, वे भोग भी दे सकते हैं, मोक्ष भी दे सकते हैं, परम पद का पता बताते-बताते उसका अनुभव भी करा सकते हैं।

ब्रहम गिआनी१ मुकति२ जुगति३ जीअ४ का दाता ।।
ब्रहम गिआनी पूरन पुरखु५ बिधाता६ ।।
ब्रहम गिआनी का कथिआ न जाइ अधाख्यरु ।।७
ब्रहम गिआनी सरब८ का ठाकुरु९ ।।

१. ब्रह्मज्ञानी २. मुक्ति ३. युक्ति ४. जीवन ५. पूर्ण पुरुष ६. विधाता ७. ब्रह्मज्ञानी की महिमा का आधा अक्षर भी बखान नहीं किया जा सकता ८. सर्व ९. भगवान/पूज्य

प्रत्येक कार्य में गूढ़ रहस्य

लगभग दिसम्बर २०११ की बात है। संत श्री आशारामजी आश्रम, ब्रह्मपुरी, ऋषिकेश में पूज्य बापूजी एकांत हेतु पधारे थे। साधकों की प्रार्थना पर दिन में एक समय सत्संग के लिए निर्धारित किया गया था। साधकों की संख्या ज्यादा होने से सत्संग आश्रम के बाहर खुले में पेड़ों के नीचे होता था।

हरिद्वार की अलका शर्मा एक दिन की घटना बताते हुए कहती हैं कि ''पूज्य बापूजी कुर्सी पर विराजमान थे। बहुत सारे बंदर और लंगूर पेड़ों पर बैठे थे। बापूजी ने उनके लिए मक्का उबालने को कहा और सत्संग शुरू हो गया।

सत्संग पूरा होने पर पूज्यश्री ने कूकर मँगवाया और स्वयं अपने हाथों से बंदरों और लंगूरों को मक्का खिलाने लगे। साथ ही साधकों को बता रहे थे कि ''यहाँ के बंदर बहुत भूखे होते हैं क्योंकि इन्हें यहाँ पहाड़ों में खाने को नहीं मिलता।'' तभी सत्संगियों में बैठी एक बुजुर्ग महिला उठी और प्रसाद के लिए अपने साथ लायी हुई ५ किलो मूँगफली की थैली बापूजी की मेज पर रख दी।

चारों तरफ बंदर थे। बापूजी ने पीछे खड़े सेवक को कहा : ''यह थैली उठा ले, नहीं तो बंदर इसे फाड़ देंगे, मूँगफली बिखर जायेगी।''

तभी २-३ बंदर थैली की तरफ झपटे। बंदरों ने जैसे ही थैली फाड़ने की कोशिश की, पूज्य बापूजी आगे होकर पूरी तरह थैली पर झुक गये और दोनों बाजुओं से थैली को ढक दिया। बंदरों से तो बापूजी ने मूँगफली बचा ली पर थैली फटने से मूँगफली मेज व जमीन पर बिखर गयी।

बापूजी ने सामने बैठे सत्संगियों को मूँगफली का एक-एक दाना उठाने को कहा। तभी मेरे मन में एक प्रश्न उठा कि 'आत्मरस में डूबे रहनेवाले इतने बड़े ब्रह्मज्ञानी संत, जिनको लोक-सम्पर्क में आने के लिए कितनी मुश्किल से मन को मनाना पड़ता है और अभी स्वयं अपने हाथों से बंदरों को मक्का खिला रहे थे, ४००-५०० रुपये की मूँगफली बचाने के लिए खुद उस पर झुक गये और दोनों बाजुओं से उसे ढक दिया! आखिर उन्हें क्या आवश्यकता थी?'

मेरे मन की बात तुरंत अंतर्यामी, करुणासिंधु बापूजी जान गये और बोले : ''धर्म का एक-एक पैसा लोहे के चने चबाने के समान होता है। जो उसका दुरुपयोग करता है उसकी ७-७ पीढ़ियाँ तबाह हो जाती हैं। यह मूँगफली भक्तों में प्रसादरूप में बँटने के उद्देश्य से आयी थी। बंदरों को उनका भोजन पहले ही मिल चुका था। हाँ, हम अपने हाथ से उन्हें देते तो ठीक था परंतु झपट्टा मारकर अगर वे इसे ले जाते या बिखेर देते तो मूँगफली के दुरुपयोग का दोष पड़ता। अतः इसकी रक्षा जरूरी थी।''

बात बहुत सूक्ष्म थी, पता नहीं कितने लोगों को समझ में आयी मगर मुझे याद आया, गुरुदेव सत्संग में बार-बार कहा करते थे कि धर्म के पैसे का बहुत सोच-समझकर उचित जगह पर ही उपयोग करना चाहिए। कभी भी उस पैसे का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए।

ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों के प्रत्येक कार्य व लीला में गूढ़ रहस्य छिपा होता है। इसीलिए कहा गया है :

ज्यों केले के पात में, पात पात में पात।
त्यों संतन की बात में, बात बात में बात ।।

परंतु ये सभी कार्य विश्वमांगल्य के लिए ही होते हैं।''

कुशल व्यवस्थापक व क्रियात्मक उपदेशक

सत्संग को लोग अपने जीवन में आत्मसात् कैसे कर लें इसकी कला पूज्य बापूजी बखूबी जानते हैं इसीलिए जो बातें पूज्यश्री सत्संग में बताते हैं, वे ही बातें वे स्वयं करके भी दिखाते हैं।

अनेक लोगों ने कई बार देखा है कि बापूजी स्वच्छता का बहुत ध्यान रखते हैं। अहमदाबाद आश्रम में बापूजी की गाड़ी आमतौर पर सीधा व्यासपीठ के पास जाती है लेकिन कभी-कभी बापूजी आश्रम के रसोईघर की ओर तो कभी बड़ बादशाह या पंडाल के आसपास के स्थानों पर घूमकर व्यवस्था देख लेते हैं। एक बार बापूजी की गाड़ी आश्रम में आयी और बड़ बादशाह के पास की कुटिया के सामने रुकी।

बापूजी गाड़ी से उतरकर कुटिया का बाहर से अवलोकन करने लगे। पूज्यश्री ने देखा कि कुटिया की दीवाल, खिड़की व दरवाजे पर काफी धूल व जाले लगे हैं। बापूजी ने बिना किसीको कुछ कहे स्वयं झाड़ू उठायी और जाले व धूल साफ करने लगे। कुछ साधकों ने बापूजी से झाड़ू लेनी चाही परंतु आपश्री ने नहीं दी। आपश्री को सफाई करते देख सभी लोग झाड़ू लेकर सफाई करने लगे। ५-१० मिनट में कुटिया के आसपास पूरी साफ-सफाई हो गयी।

बापूजी जब भी अहमदाबाद में रुकते हैं तो प्रायः सुबह या शाम को आश्रम की गौशाला में जाते हैं। एक बार गौशाला के रास्ते में गंदगी पड़ी थी तो पूज्यश्री स्वयं ही सफाई करने लगे।

मई २०१० में हरिद्वार आश्रम में कुम्भ-स्नान पूरा होने के बाद बापूजी रुके हुए थे। एक दिन शाम को पूज्यश्री आश्रम में टहल रहे थे तो वहाँ रास्ते पर पत्थरों का छोटा-सा ढेर पड़ा हुआ था। लोगों को आने-जाने में तकलीफ होगी यह देखकर बापूजी बिना किसीको कुछ बोले स्वयं ही हाथों से पत्थरों को उठा के किनारे रखने लगे। पूज्यश्री को ऐसा करते देख आसपास मौजूद अन्य साधक भी उस सेवा में लग गये और कुछ ही मिनटों में रास्ते पर से ढेर हट गया।

लगभग वर्ष २००६-२००७ की घटना है। रात्रि के समय पूज्यश्री अहमदाबाद आश्रम में घूम रहे थे। आश्रम के पुराने मुख्य द्वार के सामने रास्ते में कंकड़ पड़े हुए थे। बापूजी ने देखा कि लोगों को ये कंकड़ चुभेंगे, तकलीफ होगी। अतः आपश्री स्वयं ही कंकड़ बीनने लगे। इससे वहाँ उपस्थित सभी साधक भी कंकड़ बीनने लगे।

ऐसे तो अनेकानेक दृष्टांत हैं।

एक बार बापूजी ने सत्संग में बताया : ''मैं किस-किसको बोलता सफाई के लिए परंतु मैं खुद सफाई करने

लगा तो सभी सेवा में लग गये और तब से कभी मैंने फिर वैसी गंदगी नहीं देखी । हमेशा के लिए समस्या का समाधान हो गया ।''

इस प्रकार बापूजी कुशल व्यवस्थापक (मैनेजमेंट के ज्ञाता) हैं । क्रियात्मक उपदेश देना भी बापूजी के जीवन की एक विशेषता रही है ।

मनुष्यों को ही नहीं, पशुओं को भी आनंदित करते हैं बापूजी

बापूजी कई बार विनोद भी ऐसा करते हैं कि हताश व्यक्ति भी आनंदित व उत्साहित हो जाता है । सन् २००५-०६ के लगभग खेरालु (गुजरात) में बापूजी का सत्संग था । सत्संग-स्थल से कुछ दूरी पर बापूजी का निवास था । बापूजी नित्य-नियम के अनुसार घूमने निकले । पड़ोस के किसान के खेत में भैंसें थीं । बापूजी को भैंस की हू-बहू आवाज निकालते हुए सत्संग में सभीने देखा है । भैंसों को देखकर बापूजी को विनोद सूझा । पूज्यश्री ने भैंसों की आवाज रिकॉर्ड करवायी और उस ऑडियो ट्रैक को भैंसों के सामने ही चलवाया । भैंसें पहले तो रँभा रही थीं परंतु जब उन्होंने देखा कि गाड़ी में से उनकी तरह ही आवाज आ रही है तो वे अचम्भित होकर इधर-उधर देखने लगीं । बापूजी ने थोड़ी देर के लिए आवाज बंद करवा के फिर चालू करवायी । इस प्रकार वह ट्रैक चलाते रहने के लिए बोलकर बापूजी चले गये । फिर तो भैंसों को गाड़ी से अपनी तरह की आवाज सुन के आनंद आने लगा और वे सभी भैंसें गाड़ी के नजदीक आ गयीं । सभी लोग वह नजारा देख रहे थे । मनुष्य ही नहीं, पशुओं को भी आनंदित करते हैं पूज्य बापूजी ।

ठंड न जाने कहाँ लापता हो गयी !

८ जनवरी २०१२ की बात है । पूज्यश्री का पूर्णिमा दर्शन-सत्संग का कार्यक्रम उज्जैन (म.प्र.) में था । उस दिन कोहरा छाया था, सूर्यदेव बादलों में छिपे थे । माघ मास की कड़ाके की ठंड थी । पंडाल में बैठे भक्त गर्म कपड़े पहने एवं कम्बल, शाल आदि ओढ़े हुए थे फिर भी ठंड से ठिठुर रहे थे । इतने में पूज्य बापूजी अपनी ब्रह्मानंद की मस्ती छलकाते हुए केवल धोती पहने हुए पधारे । बापूजी के आते ही 'हरि ॐ... हरि ॐ...' का कीर्तन प्रारम्भ हुआ, पूज्यश्री स्वयं नृत्य करने लगे ।

सब भक्त भी खड़े होकर कीर्तन करते हुए नाचने लगे । बापूजी दोनों हाथों से प्रसाद भी लुटाने लगे । यह सिलसिला काफी देर चला । सभीने कम्बल, शाल आदि उतार फेंके । सबके चेहरे पर प्रसन्नता व उमंग छा गयी और ठंड न जाने कहाँ लापता हो गयी ! लगभग आधे घंटे बाद कोहरा भी छँट गया और सूर्यदेव भी बादलों से बाहर आ गये ।

ऐसा पाप क्यों करते हो ?

किसी आश्रमवासी ने आपकी मनचाही नहीं की तो उसका नाम और आपकी फरियाद मेरे तक भेजने का प्रयत्न करो, सभी आश्रमवालों को बदनाम करने का पाप क्यों करते हो ? किसी साधक से कोई गलती हो गयी तो आश्रम के मुख्य व्यक्ति से कहो । सभी साधकों को बदनाम करने की बड़ी गलती क्यों करते हो ?

– पूज्य बापूजी,
(जोधपुर, २-०६-२०१६)

सावधान !

ओजस्वी पार्टी या ओजस्वी पार्टी का नाम लेकर जो भाषणबाजी करते हैं, ऐसे लोगों से संत श्री आशारामजी आश्रम का कोई लेना-देना नहीं है । ऐसी पार्टियों से आश्रम का कोई लेना-देना नहीं है । (१५-९-२०११ के सत्संग में जाहिर में बापूजी ने ओजस्वी पार्टी के बारे में लोगों को सावधान किया था, देखें विडियो : https://goo.gl/gwsy7S)

रागरहित होने का उपाय है कि आपके पास जो भी वस्तु, व्यक्ति व योग्यताएँ हैं उनका दुरुपयोग करना छोड़ दो ।

पग-पग पर गुरुकृपा

'श्रीमद्भागवत' में गुरु-महिमा का वर्णन करते हुए भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : ''ज्ञानोपदेश देकर परमात्मा को प्राप्त करानेवाला गुरु तो मेरा स्वरूप ही है ।'' सभी महान ग्रंथों ने गुरु-महिमा गायी है । जिस ग्रंथ में गुरु-महिमा नहीं वह तो सद्ग्रंथ ही नहीं है । श्री रामचरितमानस (रामायण) में भी गुरु-महिमा पग-पग पर देखने को मिलती है ।

रामजी का जन्म गुरुकृपा से

रामायण में आता है कि एक बार राजा दशरथ के मन में बड़ी ग्लानि हुई कि 'मुझे पुत्र नहीं हैं ।' गुर गृह गयउ तुरत महिपाला ।... दशरथजी अपने गुरुदेव वसिष्ठजी के आश्रम में गये और उनके चरणों में प्रणाम कर विनयपूर्वक अपना सारा दुःख सुनाया ।

श्री वसिष्ठजी ने उन्हें समझाया और कहा : ''तुम्हें चार पुत्र होंगे ।'' गुरुजी ने पुत्रकामेष्टि यज्ञ करवाया, जिसके फलस्वरूप रामजी का जन्म हुआ ।

दशरथजी हर कार्य करने से पहले गुरुदेव से पूछते थे । गुरुकृपा के कारण ही राजा दशरथ देवासुर संग्राम में देवताओं की मदद करने सशरीर स्वर्ग गये थे ।

एक बार शनिदेव रोहिणी का भेदन करनेवाले थे, जिससे पृथ्वी पर बारह वर्षों तक अकाल पड़ता । इस आपदा से बचाने हेतु गुरुदेव की आज्ञा पाकर राजा दशरथ उस योग के आने के पहले ही शनिदेव से युद्ध करने हेतु चले गये और गुरुकृपा से प्रजा की रक्षा करने में सफल हुए ।

दशरथजी कहते थे :

नाथ सकल संपदा तुम्हारी ।
मैं सेवकु समेत सुत नारी ॥

(श्री रामचरित. बा.कां. : ३५९.३)

दशरथजी का जीवन और राज्य-व्यवस्था गुरु के परहितपरायणता, निःस्वार्थता, परस्पर हित जैसे सिद्धांतों से सुशोभित थी । ऐसे महान गुरुभक्त के घर भगवान जन्म नहीं लेंगे तो किसके घर लेंगे ?

रामजी की शिक्षा गुरुकृपा से

विश्वामित्र मुनि राम-लक्ष्मण को लेने दशरथजी के पास आये । वृद्धावस्था में तो संतान हुई और फूल जैसे कोमल कुमारों को जंगल में ले जाने के लिए मुनि माँग रहे थे, वह भी भयंकर राक्षसों को मारने हेतु । इतने खतरों के बीच राजा दशरथ कैसे भेज देते ! लेकिन जब गुरु वसिष्ठजी ने कहा : ''महर्षि स्वयं समर्थ हैं किंतु ये आपके

पुत्रों का कल्याण चाहते हैं इसीलिए यहाँ आकर याचना कर रहे हैं।'' तो दशरथजी ने गुरुआज्ञा मानकर आदर से पुत्रों को विश्वामित्रजी के हवाले कर दिया।

इससे प्रसन्न होकर विश्वामित्रजी बोले : ''राजन् ! तुम धन्य हो ! तुम्हारे में दो गुण हैं : एक तो यह कि तुम रघुवंशी हो और दूसरा कि वसिष्ठजी जैसे तुम्हारे गुरु हैं, जिनकी आज्ञा में तुम चलते हो।''

राजा दशरथ की गुरु-वचनों में ऐसी निष्ठा थी, ऐसा आज्ञापालन का भाव था कि गुरुजी ने कहा तो प्राणों से भी प्रिय राम-लक्ष्मण को दे दिया। इसी भाव ने राजा को विश्वामित्रजी के कोप से भी बचा लिया।

रामजी को आत्मज्ञान की प्राप्ति गुरुकृपा से
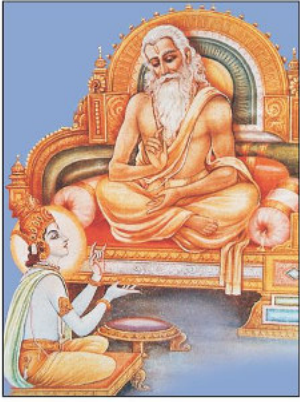
गुरु असीम धैर्य व दया के सागर होते हैं। वसिष्ठजी ने रामजी को कभी प्रेम से समझाया, कभी डाँटा, कभी प्रोत्साहन दिया, अनेक दृष्टांत देकर बताया और ज्ञानवान बना के ही छोड़ा। सबसे बड़ा पद है गुरुपद; ब्रह्मा-विष्णु-महेश भी जिन्हें झुककर प्रणाम करते हैं वे गुरु अपने शिष्य को हाथ जोड़कर कहते हैं कि ''हे रामजी ! मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ के प्रार्थना करता हूँ कि जो कुछ मैं तुमको उपदेश करता हूँ, उसमें ऐसी आस्तिक भावना कीजियेगा कि इन वचनों से मेरा कल्याण होगा।'' जिस स्थिति को पाने में ऋषि-मुनि पूरा जीवन लगा देते हैं वह स्थिति गुरु वसिष्ठजी ने सहज में रामजी को दिला दी।

रामजी तो भगवान विष्णु के अवतार थे, ज्ञातज्ञेय थे फिर भी मानवरूप में आने पर ज्ञान पाने के लिए गुरु की शरण में जाना ही पड़ा।

रामजी का विवाह गुरुकृपा से

राजा दशरथ इतने बड़े गुरुभक्त थे तो रामजी पीछे कैसे रहते ! रामजी भी कोई भी कार्य गुरुदेव को बिना पूछे नहीं करते थे। लक्ष्मणजी को जनकपुरी देखने की इच्छा हुई तो रामजी गुरुजी की आज्ञा लेकर वहाँ गये। धनुष उठाने व तोड़ने का सामर्थ्य होते हुए भी जब गुरुदेव ने आज्ञा दी, तब उनको प्रणाम कर धनुष तोड़ा पर अपने में किसी विशेषता के अहंकार को फटकने नहीं दिया। रामजी ने धनुष तोड़ा तो गुरुआज्ञा से, विवाह किया तो गुरुआज्ञा से। अगर कोई भी शिष्य अपने जीवन में सद्गुरु की आज्ञा, गुरु के आदर्शों को ले आये तो उसका जीवन भी रामजी की तरह वंदनीय और यशस्वी होगा।

भगवान के चौबीस प्रमुख अवतारों में श्रीराम व श्रीकृष्ण अवतार मानव-जाति के लिए विशेष प्रेरणाप्रद हो सके क्योंकि इन दो अवतारों में भगवान ने यह दिखाया कि किस प्रकार मनुष्य गुरुकृपा से जीवन के महान लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

समस्त संसार में हिन्दुओं की ही एक ऐसी जाति है, जिसने धार्मिक एवं दार्शनिक सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप दिया है। यही जाति पृथ्वी पर ऐसी रह गयी है जो वेद-शास्त्रों पर अगाध श्रद्धा रखती है। यही एक जाति है जो न केवल आत्मा की अमरता पर विश्वास रखती है बल्कि अनेकता में एकता को भी प्रत्यक्ष देखती है। ये ऐसे तत्त्व हैं जिन्हें आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों समस्त विश्व अपनाना चाहेगा, इनकी आवश्यकता का अनुभव करेगा; एक दिन उसे अध्यात्म की ओर प्रवृत्त होना ही पड़ेगा। उस समय यही हिन्दू जाति उसे मार्ग दिखलायेगी। यदि यही मिट गयी तो क्या होगा ? मानव-जाति को फिर 'क, ख, ग...' से प्रारम्भ करना होगा।

– महामना पंडित मदनमोहन मालवीयजी

काँवरियों की सेवा हो जाय तो मुझे बहुत आनंद होगा

पूज्य बापूजी

श्रावण मास : २० जुलाई से १८ अगस्त

अहंकार लेने की भाषा जानता है और प्रेम देने की भाषा जानता है। अहंकार को कितना भी हो, और चाहिए, और चाहिए... और प्रेमी के पास कुछ भी नहीं हो फिर भी दिये बिना दिल नहीं मानता । शिवजी की जटाओं से गंगा निकलती है फिर भी प्रेमी भक्त काँवर में पानी लेकर यात्रा करते हैं और शिवजी को जल चढ़ाते हैं।

पुष्कर में एक बार मैं सुबह अजमेर के रास्ते थोड़ा-सा पैदल घूमने गया तो कई काँवरिये मिले। उनको देखकर मेरा हृदय बहुत प्रसन्न हुआ कि १५-१७-२० साल के बच्चे जा रहे थे पुष्कर से जल ले के। मैं खड़ा हुआ तो पहचान गये, ''अरे! बापूजी हैं।''

मैंने कहा : ''कब आये थे ?''

बोले : ''रात को आये थे।''

''कहाँ सोये थे ?''

''वहाँ पुष्करराज में सो गये थे ऐसे ही। सुबह जल भर के जा रहे हैं।''

''कहाँ चढ़ाओगे ?''

''अजमेर में भगवान को चढ़ायेंगे।''

उन बच्चों को पता नहीं है कि वे काँवर से जल उठाकर जा के देव को चढ़ाते हैं; देव को तो पानी की जरूरत नहीं है लेकिन इससे उनका छुपा हुआ देवत्व कितना जागृत होता है ! बहुत सारा फायदा होता है । अगर वे युवक रात को पुष्करराज में नहीं आते तो रात को सोते और कुछ गपशप लगाते । जो शिवजी को जल चढ़ा रहे हैं कि 'चलो पुष्कर अथवा चलो गंगाजी' तो भाव कितना ऊँचा हो रहा है ! पहले काँवरिये इतने नहीं थे जितने अभी मैं देख रहा हूँ। मुझे तो लगता है भारत का भविष्य उज्ज्वल होने के दिन बड़े तेजी से आयेंगे। तो यह संतों का संकल्प है कि भारत विश्वगुरु बनेगा। जिस देश में काँवरिये बच्चे या भाई लोग नहीं दिखाई देते उस देश के लेडी-लेडे (युवक-युवतियाँ) तो चिपके रहते हैं, सुबह देर तक सोये रहते हैं, परेशान रहते हैं फिर नींद की गोलियाँ खाते हैं, न जाने क्या-क्या करते हैं ! इससे तो हमारे काँवरियों को शाबाश है ! मैं सोचता हूँ हमारे युवा सेवा संघ के युवक ऐसा कुछ करें कि जहाँ भी काँवरिये जाते हों, रोक के उनको आश्रम की टॉफियाँ, आश्रम का कोई प्रसाद दे दें, कोई पुस्तक दे दें। सावन महीने में काँवरियों की सेवा हो जाय तो मुझे तो बहुत आनंद होगा। बड़े प्यारे लगते हैं, 'नमः शिवाय, नमः शिवाय...' करके जाते हैं न, तो लगता है कि उन्हें गले लगा लूँ ऐसे प्यारे लगते हैं मेरे को।

'बं बं बं... ॐ नमः शिवाय...' इस प्रकार कीर्तन करने से कितना भाव शुद्ध, पैदल चलने से क्रिया शुद्ध होती है। और उनमें कोई व्यसनी हो तो उसे समझाना कि 'काँवर ली तो पान-मसाला नहीं खाना बेटे ! सुपारी नहीं खाना । गाली सुनाना नहीं, सुनना नहीं। इससे और मंगल होगा।'

भाव शुद्ध व क्रिया शुद्ध होने का फल है कि हृदय-मंदिर में ले जानेवाले कोई ब्रह्मज्ञानी महापुरुष मिल जायें,

उनका सत्संग मिल जाय । जो मंदिर-मस्जिद में नहीं जाते, तीर्थाटन नहीं करते उनकी अपेक्षा वहाँ जानेवाले श्रेष्ठ हैं किंतु उनकी अपेक्षा हृदय-मंदिर में पहुँचनेवाले साधक प्रभु को अत्यंत प्रिय हैं। जिसको हृदय-मंदिर में पहुँचानेवाले कोई महापुरुष मिल जाते हैं, उसका बाहर के मंदिर में जाना सार्थक हो जाता है।

घरमां छे काशी ने घरमां मथुरा,
घरमां छे गोकुळियुं गाम्र रे ।
मारे नथी जावुं तीरथ धाम रे ।।

घर का मतलब तुम्हारा चार दीवारोंवाला घर नहीं बल्कि हृदयरूपी घर । उसमें यदि तुम जा सकते हो तो फिर तीर्थों में जाओ-न जाओ, कोई हरकत नहीं । यदि तुम भीतर जा सके, पहुँच गये, किसी बुद्ध (आत्मबोध को उपलब्ध) पुरुष के वचन लग गये तुम्हारे दिल में तो फिर तीर्थों से तुम्हें पुण्य न होगा, तुमसे तीर्थों को पवित्रता मिलेगी । तीर्थ तीर्थत्व को उपलब्ध हो जायेंगे।

तीर्थयात्रा से थोड़ा फल होता है लेकिन उससे ज्यादा फल भगवान के नाम में है । उससे ज्यादा गुरुमंत्र में है और उससे ज्यादा गुरुमंत्र का अर्थ समझकर जप करने में है । भगवान को अपना और अपने को भगवान का, गुरु को अपना और अपने को गुरु का माननेवाले को ...मद्भक्तिं लभते पराम् । (गीता : १८.५४) पराभक्ति व तत्त्वज्ञान का सर्वोपरि लाभ होता है।

आत्मलाभात् परं लाभं न विद्यते ।
आत्मसुखात् परं सुखं न विद्यते ।
आत्मज्ञानात् परं ज्ञानं न विद्यते ।

अनमोल युक्तियाँ

- पूज्य बापूजी

घर के झगड़े व चिड़चिड़ा स्वभाव मिटाने की युक्ति

'हे प्रभु ! आनंददाता ! ज्ञान हमको दीजिये ।...' घर में इस प्रार्थना का पाठ होना चाहिए । इससे चिड़चिड़ा स्वभाव गायब हो जायेगा, घर से झगड़े गायब हो जायेंगे। काहे को माँ और बहन की लड़ाई हो ? काहे को बेटे और बाप में वैमनस्य हो ? काहे को सासु और बहू में मनमुटाव हो ? यह पाठ घर-घर में करो :

हे प्रभु ! आनंददाता ! ज्ञान हमको दीजिये ।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिये ।।
निंदा किसीकी हम किसीसे भूलकर भी ना करें।
ईर्ष्या कभी भी हम किसीसे भूलकर भी ना करें ।।
सत्य बोलें झूठ त्यागें मेल आपस में करें।
दिव्य जीवन हो हमारा यश तेरा गाया करें ।।

(पूरी प्रार्थना आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'बाल भजनमाला' या 'गुरु आराधनावली' में पढ़ें।)

पूरी याद नहीं रखी, केवल ये दो-तीन पंक्तियाँ ही गुनगुनायीं तो भी घर की अशांति, झगड़े, वैर-जहर, जिनसे मन मलिन होता है, तबीयत खराब होती है, कुटुम्ब में विष फैलता है, देश में विष फैलता है, वह सारा विष मिटाने का पुण्यकार्य तुम्हारे द्वारा वातावरण में होने लगेगा । विद्यार्थी हैं तो क्या है ? बालक हैं तो क्या है ? अभी से देश को मजबूत बनाओ, अभी से अपनी संस्कृति के प्रसाद को दुनियाभर के लोगों को देकर सुखी बना सकते हैं ऐसा भारतीय संस्कृति के पास खजाना छुपा है।

जीवन सुखमय बनाने हेतु

जो गृहस्थ फिल्में देखते हैं उनका जीवन सुखमय नहीं होता है । फिल्मों में जैसी पत्नी दिखती है वैसी आपकी नहीं हो सकती है, फिल्मों में जैसा पति होता है वैसा आपका नहीं हो सकता है । इसलिए फिल्में देखकर अपने जीवन में जहर मत घोलो, भगवान का प्रेमी हो के मधुमय जीवन बनाओ। पति पत्नी के संयम व साधना में साथ दे, पत्नी पति के संयम और साधना में साथ दे तो सीताराममय, शिव-पार्वती जैसा जीवन हो जायेगा।

सत्कर्मों का महाफल देनेवाला काल : चतुर्मास

- पूज्य बापूजी

(चतुर्मास व्रत : १५ जुलाई से ११ नवम्बर)

चतुर्मास में भगवान नारायण एक रूप में तो राजा बलि के पास रहते हैं और दूसरे रूप में शेषशय्या पर शयन करते हैं, अपने योग स्वभाव में, शांत स्वभाव में, ब्रह्मानंद स्वभाव में रहते हैं। अतः इन दिनों में किया हुआ जप, संयम, दान, उपवास, मौन विशेष हितकारी, पुण्यदायी, साफल्यदायी है। भगवान शेषशय्या पर सोते हैं, अतः हमें धरती या पलंग पर सादा बिस्तर अथवा कम्बल बिछाकर शयन करना चाहिए।

चतुर्मास में दीपदान करनेवाले की बुद्धि, विचार और व्यवहार में ठीक ज्ञान-प्रकाश की वृद्धि होती है और कई दीपदान करने का फल भी होता है। इन दिनों में प्रातः नक्षत्र (तारे) दिखें उसी समय उठ जाय, नक्षत्र-दर्शन करे। चौबीस घंटे में एक बार भोजन करे - ऐसे व्रतपरायण व्यक्ति को अग्निष्टोम यज्ञ का फल मिल जाता है। (पद्म पुराण, उत्तर खंड)

चतुर्मास में केवल दूध पर रहनेवाले अथवा केवल फल पर रहनेवाले के पापों का नाश हो जाता है तथा साधन-भजन में बड़ा बल मिलता है - ऐसा स्कंद पुराण में लिखा है। नमक का त्याग कर सकें तो अच्छा है। जो दही का त्याग करता है उसको गोलोक की प्राप्ति होती है।

चतुर्मास में दोनों पक्षों की एकादशी रखनी चाहिए। बाकी दिनों में गृहस्थी को शुक्ल पक्ष की ही एकादशी रखनी चाहिए। चतुर्मास में शादी-विवाह, सकाम कर्म वर्जित हैं। तिल व आँवला मिश्रित अथवा बिल्वपत्र के जल से स्नान करना पापनाशक, प्रसन्नतादायक होगा। अगर 'ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय...' ५ बार जप करके फिर पानी का लोटा सिर पर डाला तो पित्त की बीमारी, कंठ का सूखना - यह कम हो जायेगा, चिड़चिड़ा स्वभाव भी कम हो जायेगा।

चतुर्मास में पाचनतंत्र दुर्बल होता है तो खानपान सादा, सुपाच्य होना चाहिए। इन दिनों पलाश की पत्तल पर भोजन करनेवाले को एक-एक दिन एक-एक यज्ञ करने का फल होता है, वह धनवान, रूपवान और मानयोग्य व्यक्ति बन जायेगा। पलाश की पत्तल पर भोजन बड़े-बड़े पातकों का नाशक है, ब्रह्मभाव को प्राप्त करानेवाला होता है। नहीं तो वटवृक्ष के पत्तों या पत्तल पर भोजन करना पुण्यदायी कहा गया है।

भगवान शंकर को बिल्वपत्र चढ़ाओ तो पूरे मंदिर में बिल्वपत्र का हवामान रहेगा और वही हवा श्वास के द्वारा व्यक्ति लेगा, इससे वायु-प्रकोप दूर होगा तथा वनस्पति व मंत्र का आपस में जो मेल होगा उसका भी लाभ मिलेगा। इसलिए सावन महीने में बिल्वपत्र की महिमा है।

इन ४ महीनों में अगर पति-पत्नी हैं, तब भी ब्रह्मचर्य का पालन करना आयु, आरोग्य और पुष्टि में वृद्धि करता है। भोग-विलास, शारीरिक स्पर्श ज्यादा हानि करेगा। इस समय सूर्य की किरणें धरती पर कम पड़ती हैं तो जीवनीशक्ति कमजोर रहती है, जिससे वीर्य, ओज कम बनता है। जो विदेशी लोग चतुर्मास के महत्त्व को नहीं जानते वे 'यह पाऊँ, यह खाऊँ...' में उलझते हैं, विकलांग, चिड़चिड़े, पति-बदलू, पत्नी-बदलू, फैशन-बदलू हो जाते हैं, फिर भी दुःखी व अशांत रहते हैं। जो इसका महत्त्व जानते हैं और नियम पालते हैं वे कुछ बदलू नहीं होते फिर भी अबदल आत्मा में उनका रसमय जीवन होता है।

कितनी असुविधा होती है भारतवासियों को, फिर भी शांति, आनंद और मस्ती-मजे में रह रहे हैं। और कई माई-भाई ऐसे हैं कि जो वे कह देते हैं वह हो जाता है अथवा जो होनी होती है वह उनको पता चल जाती है। विदेशियों के पास ऐसा सामर्थ्य नहीं है।

चतुर्मास में निंदा न करे, ब्रह्मचर्य का पालन करे, किसी भी अविवाहित या दूसरे की विवाहित स्त्री पर बुरी नजर न करे, संत-दर्शन करे, संत के वचनवाले सत्शास्त्र पढ़े, सत्संग सुने, संतों की सेवा करे और सुबह या जब समय मिले भ्रूमध्य में ॐकार का ध्यान करने से बुद्धि का विकास होता है।

मिथ्या आचरण का त्याग कर दे और जप-अनुष्ठान करे तो उसे ब्रह्मविद्या का अधिकार मिल जाता है। जिसने चतुर्मास में संयम करके अपना साधन-भजन का धन नहीं इकट्ठा किया मानो उसने अपने हाथ से अमृत का घड़ा गिरा दिया। और मासों की अपेक्षा चतुर्मास में बहुत शीघ्रता से आध्यात्मिक उन्नति होती है। जैसे चतुर्मास में दूसरे मौसम की अपेक्षा पेड़-पौधों की कलमें विशेष रूप से लग जाती हैं, ऐसे ही चतुर्मास में पुण्य, दान, यज्ञ, व्रत, सत्य आदि भी आपके गहरे मन में विशेष लग जाते हैं और महाफल देने तक आपकी मदद में रहते हैं।

अच्छे निर्णय करो तो डटे रहो, सफल हो जाओगे

- पूज्य बापूजी

मैं जब बच्चा था, सत्संग में जाता-आता था तो संतों के श्रीचित्र लाकर घर में लगाता था। एक बार स्वामी विवेकानंद की तस्वीर ले आया। घर में टाँग रहा था तो मेरी भाभी, जो मेरे को बेटे की नाईं खूब प्यार करती थी लेकिन कभी-कभी चिढ़ाती भी थी, मेरे को बोली : ''यह क्या संतों की तस्वीरें लगाता रहता है ?''

मैंने कहा : ''मैं भी एक दिन ऐसा ही बनूँगा !''

बोली : ''ऊँ... ऐसा बनेगा क्या ?''

मैंने कहा : ''ऐसा बनूँगा, भगवान को पाऊँगा। जैसे अभी मैं संतों की तस्वीरें लगाता हूँ, ऐसे ही मेरी तस्वीरें हजारों-लाखों घरों में लगेंगी।''

वह मेरी भाभी कहती है : ''ऊँ... संत बनेगा ? लाखों लोगों के घर में तस्वीरें लगेंगी ? भगवान को पायेगा ? बैठा रह, बैठा रह ! छोटा मुँह और बड़ी बात !!'' और मुँह गुब्बारे जैसा फुला के दोनों हाथों से गुब्बारा फोड़ दिया।

ऐसा कोई करे तो अपना निर्णय थोड़े ही बदलना चाहिए, अपना उत्साह थोड़े ही छोड़ना चाहिए। हम तो लगे रहे। फिर जब गुरुजी की कृपा हुई और सात साल एकांत में रह के फिर गुरुजी ने अहमदाबाद भेज दिया तो आ गये मोटेरा। फिर तो वह हमारी भाभी दर्शन के लिए कतार में लगी।

मैंने कहा : ''क्यों ? ऊँ... !'' और मुँह गुब्बारे जैसा फुला के गुब्बारा फोड़ा।

तो भाभी बोली : ''प्रभु ! भूल हो गयी। भगवान हैं आप ! देखो, वह सब याद नहीं करना, हम तो बच्चे हैं आपके।''

भगवान तो सबका बाप है और जिसने भगवान में अपने 'मैं' को मिला दिया वह तो वही हो गया, फिर उम्र छोटी हो चाहे बड़ी हो, क्या फर्क पड़ता है ! अष्टावक्रजी १२ साल के थे और बड़ी उम्र, विशालकाय और विशाल राज्य के धनी जनक बोलते हैं : ''मैं आपका बालक हूँ प्रभु ! कृपा करो प्रभु !''

प्रभु को पाता है वह प्रभुमय हो जाता है। आत्मज्ञानी संत प्रकट ब्रह्म होते हैं।

सद्गुरु-चरणों में प्रार्थना

भगवान तुम्हारी जय होवे,
गुरुदेव तुम्हारी जय होवे ॥
हो तुम्हीं एक आश्रय दाता,
तुम रक्षक बंधु पिता माता ।
तुम बिन है राह कौन पाता,
तुमसे ही जीव अभय होवे ॥
तुम परम तत्त्व के ज्ञाता हो,
दुर्गति में सुगति विधाता हो ।
तुम दिव्य प्रकृति निर्माता हो,
कुसमय तुमसे सुसमय होवे ॥
दुखियों के सुख कारक तुम हो,
अधमों के उद्धारक तुम हो ।
भव सागर से तारक तुम हो,
तुमसे सौभाग्य उदय होवे ॥
पशु में मानवता लाते तुम, मानव को देव बनाते तुम ।
वह योग ध्यान विधान सिखाते तुम,
जिससे पापों का क्षय होवे ॥
कल्याण शरण में आते ही, दुखहारी दर्शन पाते ही ।
पथ-दर्शक तुम्हें बनाते ही,
आनंद लाभ अतिशय होवे ॥
धृति सुकृति सुमति मिलती तुमसे,
कीरति शुभगति मिलती तुमसे ।
तप त्याग विरति मिलती तुमसे,
अति सुंदर सदय हृदय होवे ॥
'मैं'पन सब तुममें खो जावे,
अंतर का मल यह धो जावे ।
जीवन अमृतमय हो जावे,
चेतना तुम्हीं में लय होवे ॥
ऐसा अब दे दो ज्ञान प्रभो,
कुछ रह न जाय अभिमान प्रभो ।
बस रहे तुम्हारा ध्यान प्रभो,
यह 'पथिक' प्रेम तुममय होवे ॥

– संत पथिकजी

ढूँढ़ो तो जानें

नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर वर्ग-पहेली में से खोजिये ।

(१) वेदव्यासजी किन ऋषि के पुत्र हैं ?

(२) किस दिन सद्गुरु के दर्शन व मानस-पूजन से शिष्य को वर्षभर के सभी व्रत-पर्वों का पुण्यफल फलित हो जाता है ?

(३) 'यह तन विष की बेल री, गुरु अमृत की खान । सीस दिये सद्गुरु मिलें तो भी सस्ता जान ॥' - यह वाणी किन महापुरुष की है ?

(४) ऐसे कौन हैं जिनकी पूजा करनेमात्र से समस्त संसार के देवों की पूजा हो जाती है ?

(५) व्यासपूर्णिमा का पर्व किस माह की किस तिथि को मनाया जाता है ?

म	मी	ष्ट	म	न	त्र	ब	दि	अ	अ	थ	ति
द	रि	कुं	च	ई	रं	वि	पः	स	न	तु	श्री
र	श	ब्र	ह्म	वे	त्ता	स	द्	गु	रु	थ	व
ख	क	ह	आ	त्रि	क्षा	ल	वि	रु	अ	श	सि
त्रि	रा	श	माँ	व	दा	कु	नि	पू	ष्ठ	ता	ष्ठ
र	हा	बा	पु	म	ध	ल	दा	र्णि	सं	ग	जी
र	शि	बा	आ	षा	ढ़ी	पू	र्णि	मा	त	ती	टी
ऋ	ग	द्रो	रु	त	सं	गी	डा	क	क	गु	चं
अं	क	ज	य	भ	त	के	बा	र	बी	पा	ड
ज	ज	ड़	प	गा	उ	प	रा	श	र	ऋ	षि
ता	वृ	प	क	श	र	न	ल	त	जी	प	घ
गी	त	भ	चं	र	र्ष	मा	प	र	दी	प	र

उत्तर : (१) पराशर ऋषि (२) गुरुपूर्णिमा (३) संत कबीरजी (४) ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु (५) आषाढ़ी पूर्णिमा

अमृतबिंदु

– पूज्य बापूजी

अपने शरीर की सेवा जितना दूसरे से लेंगे उतनी अंदर में पराधीनता रहेगी । जितना हो सके अपनी आवश्यकताएँ कम रखें । अपनी सेवा हो सके उतनी कम लें, अपना काम स्वयं करें ।

दिल्ली में विराट सत्याग्रह

सत्याग्रहियों ने की माँग : ''निर्दोष बापूजी को रिहा करो !''

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू की ससम्मान रिहाई की माँग को लेकर हजारों लोगों ने १२ से १५ मई तक दिल्ली के जंतर-मंतर पर विशाल सत्याग्रह किया । 'अखिल भारतीय नारी रक्षा मंच' द्वारा आयोजित इस सत्याग्रह में सभी उम्र के लोग थे, जिनमें महिलाएँ भी बड़ी संख्या में शामिल थीं । सत्याग्रहियों के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्रों के तहत कुछ कानूनों की आड़ में निर्दोष संतों एवं साध्वियों को फँसाकर सनातन संस्कृति को बदनाम किया जा रहा है । उसी कड़ी में पूज्य बापूजी, जिन्होंने अपना पूरा जीवन समाज के उत्थान में लगा दिया, उन्हें बिना किसी ठोस सबूत, बिना किसी मेडिकल आधार, केवल मोहरा बनायी गयी एक लड़की के झूठे आरोपों के चलते पिछले पौने तीन वर्षों से कारागृह में रखा गया है । इससे देश-विदेश के करोड़ों लोग पीड़ित हैं ।

उल्लेखनीय है कि ७९ वर्षीय पूज्य बापूजी को 'ट्राइजेमिनल न्यूराल्जिया' की तकलीफ है । इससे ज्यादा दर्द अन्य किसी बीमारी में नहीं होता । इसकी असहनीय पीड़ा से बचने के लिए कभी-कभी लोग आत्महत्या भी कर लेते हैं इसलिए इसे **suicide disease** भी कहते हैं । कारागृह में इलाज के लिए अनुकूल वातावरण न होने से वहाँ इलाज में सफलता नहीं मिल रही है ।

पूज्य बापूजी को जब कारागृह में लाया गया था, तब डॉक्टरों द्वारा उन्हें दो बीमारियाँ बतायी गयी थीं । दिन बीतते गये और कारागृह के वातावरण में स्वास्थ्य दिनोंदिन बिगड़ता गया । बाद में 'अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान' **(AIIMS)** ने जाँच करके ६ बीमारियाँ बतायीं । हाल ही में बापूजी को कुछ दिनों से दाँतों और कमर में भी दर्द प्रारम्भ हो गया है, जिससे उनका बोलना और चलना भी पीड़ादायक हो गया है । उन्हें अब व्हील चेयर पर न्यायालय में लाया जाता है । इतना कष्ट सहते हुए भी पूज्य बापूजी हमेशा भक्तों को धैर्य और शांति बनाये रखने का संदेश देते रहे हैं ।

निर्दोष संत को इतनी पीड़ा और अनगिनत अत्याचार सहते देख कइयों ने अन्न छोड़ा तो कुछ ने जल भी छोड़ के तपती धूप में जंतर-मंतर पर शांतिपूर्ण सत्याग्रह चालू कर दिया । दूर-दूर से आये लोग ४ दिनों तक शांतिपूर्ण ढंग से यही कह रहे थे कि ''निर्दोष बापूजी को रिहा करो !''

पूज्य बापूजी की रिहाई व षड्यंत्र की जाँच में तेजी की माँग की

सत्याग्रहियों का कहना था कि षड्यंत्र के तहत बापूजी को फँसाया गया है यह न्यायालय में विभिन्न बयानों एवं सबूतों के माध्यम से उजागर हो चुका है। सत्याग्रहियों ने साजिशकर्ताओं की जाँच में तेजी लाने तथा बापूजी को शीघ्र रिहा करने की माँग सरकार के समक्ष रखी।

सर्वोच्च न्यायालय के एक फैसले के अनुसार भारत में एक व्यक्ति की औसत आयु ६५ वर्ष है तथा वृद्धावस्था जमानत देने के लिए प्रासंगिक एवं महत्त्वपूर्ण है, जैसा कि २००९ (११) एस.सी.सी. ३६३ एवं अन्य निर्णयों में कहा गया है।

सत्याग्रहियों द्वारा पॉक्सो कानून के दुरुपयोग को रोकने हेतु इसमें आवश्यक संशोधन करने की बात भी रखी गयी ताकि पूज्य बापूजी की तरह अन्य किसी निरपराध व्यक्ति को सताया न जाय।

सत्याग्रहियों के एक प्रतिनिधि मंडल द्वारा केन्द्रीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंहजी को बापूजी के स्वास्थ्य, निर्दोषता, उन्हें फँसाने के लिए रचे गये षड्यंत्र एवं केस की वस्तुस्थिति से अवगत कराया गया और शीघ्र रिहाई की माँग की गयी। इसी उद्देश्य से राष्ट्रपतिजी को भी ज्ञापन दिया गया।

जोधपुर व सूरत में भी जिलाधिकारी के माध्यम से प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, कानून मंत्री, राष्ट्रपति आदि को ज्ञापन भेजे गये।

सोशल मीडिया में 'ट्विटर', 'फेसबुक' आदि माध्यमों से देश-विदेश के लाखों लोगों ने इस सत्याग्रह का समर्थन किया। ट्विटर पर भारत में #Satyagrah4BapujiRelease, #ProtestTo StopInjustice आदि टॉप ट्रेंड बने रहे।

साध्वी प्रज्ञा सिंहजी करीब ८ साल तक जेल की भयंकर प्रताड़नाएँ सहती रहीं, इसके बाद उनको क्लीन चिट मिल पायी। जगद्गुरु शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी को ९ साल के बाद निर्दोष बरी किया गया। जगद्गुरु शंकराचार्य श्री राघवेश्वर भारतीजी, श्री कृपालुजी महाराज, द्वारका के स्वामी केशवानंदजी आदि अनेक संत-महापुरुषों को भी घिनौने मनगढ़ंत आरोप लगाकर बदनाम किया गया और बाद में वे निर्दोष साबित हुए।

जिनका पल-पल समाज के कल्याण में लगता था, ऐसे पूज्य बापूजी को इतने समय से कारागृह में रखने से देश व समाज को जो नुकसान हो रहा है वह बापूजी से लाभान्वित जनता एवं सज्जन व संस्कृति-प्रेमी लोग तो समझ ही रहे हैं तथा अन्य भी सत्यप्रेमी आसानी से समझ सकते हैं। आखिर हिन्दू संतों एवं उनके भक्तों के साथ यह अन्याय कब तक ?

(आदित्य ठाकुर)

मोक्ष की इच्छा है अत्यंत दुर्लभ

मनुष्य-शरीर मिलना दुर्लभ है। मनुष्य होकर मुमुक्षु होना, यह दूसरी दुर्लभ वस्तु है। 'अवधूत गीता' के प्रारम्भ में एक श्लोक है और यह श्लोक 'खंडनखंडखाद्य' में भी है।१ इसमें कहा है कि ईश्वर के अनुग्रह से ही मनुष्य के मन में अद्वैत की वासना का उदय होता है। यह बड़े-बड़े भयों से बचाती है परंतु सृष्टि में किसी-किसीको होती है। यह अद्वैत वासना ही मोक्ष की इच्छा है।

इसी प्रकार गीता में भी कहा है कि हजारों मनुष्यों में कोई ही ईश्वरप्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है और उन हजार-हजार सिद्धों में भी किसी-किसीको ही तत्त्वज्ञान होता है।२

मुमुक्षा अर्थात् मोक्ष की इच्छा माने छूटने की इच्छा। जिन बंधनों में आप फँसे हैं उनसे छूटने की इच्छा का नाम मुमुक्षा है : मोक्तुम् इच्छा मुमुक्षा। यह मोक्ष की इच्छा जिस मनुष्य में रहती है उसका नाम है मुमुक्षु।

आप किन बंधनों में फँसे हैं ? असल में आप किसी भी बंधन में नहीं हैं। किसके साथ आपकी हड्डी जुड़ी हुई है ? किसके साथ आपके हाथ-पाँव बँधे हुए हैं ? सारे बंधन मानसिक हैं। मन की ऐसी आदत पड़ गयी है कि यह कहीं-न-कहीं अपने को बाँध लेता है। बाह्य विषयों के साथ बंधन नहीं होता। यह मन विषय की कल्पना के बिना रहता ही नहीं है इसलिए इसी मनःकल्पित विषय से मिलता-जुलता बाह्य विषय का जो स्वरूप है उस विषय से ही बंधन प्रतीत होता है।

विषय या संबंध भी कल्पित है और उसका बंधन भी कल्पित है। सम्पदा ने कभी आपको अपने साथ नहीं बाँधा, मन ने आपको सम्पदा के साथ बाँधा है। सम्पदा तो अपने मालिक को पहचानती ही नहीं है। व्यक्तियों के साथ भी सारे संबंध मानसिक ही हैं।

विषय-विकारों में सत्यत्व-बुद्धि और सुख-बुद्धि उन-उन विषयों में राग, द्वेष और संबंध की कल्पना को जन्म देते हैं। उसीसे बंधन होता है।

बंधन में जब सुख मानने लगते हैं, तब उससे छूटने की इच्छा ही समाप्त हो जाती है। असल में हम छोड़ना क्या चाहते हैं ? मकान, आदमी, धरती, रुपया-पैसा-जेवर - ये कुछ छोड़ना नहीं चाहते। हम तो इनसे प्राप्त होनेवाले दुःख को छोड़ना चाहते हैं। दुःख व दुःखदायी को हम छोड़ना चाहते हैं और सुख एवं सुखदायी को पकड़ना चाहते हैं।

इसलिए मुमुक्षा का प्रारम्भ वहाँ होता है, जहाँ निसर्ग से प्राप्त होनेवाले सुख-दुःख का विवेक प्रारम्भ होता है। जहाँ-जहाँ और जो-जो दुःखरूप या दुःखदायी मालूम पड़ने लगेगा, उसकी अहंता-ममता छोड़ते जायेंगे और जहाँ-जहाँ तथा जो-जो सुखरूप या सुखदायी मालूम पड़ता जायेगा, उसको आप पकड़ने की चेष्टा करते

जायेंगे । जो सुखरूप या सुखदायी भी प्रतीत होता है परंतु आने-जानेवाला है वह अनित्य सुख भी दुःखरूप हो जायेगा । अतः दुःख और अनित्यता से जब वैराग्य प्रारम्भ होता है तभी असली मुमुक्षा प्रारम्भ होती है ।

पहले वस्तुओं और व्यक्तियों से, उनके संबंध से छूटने की इच्छा होती है, यह अपर वैराग्य की स्थिति में मुमुक्षा का स्वरूप है ।

बाद में उस अंतःकरण से ही छूटने की इच्छा होती है जिसमें ये सब इच्छाएँ होती हैं । यह शुद्ध वैराग्य की स्थिति में मुमुक्षा का स्वरूप है ।

राग-द्वेष अंतःकरण में होते हैं । जिससे राग-द्वेष की इच्छा होती है वही यदि कट जाय तो बंधन की आत्यंतिक निवृत्ति हो जाय ! योगवासिष्ठ में बृहस्पतिजी ने अपने पुत्र 'कच' को उपदेश किया कि परमानंद की प्राप्ति के लिए त्याग करो । कच एक बरस घूम आया फिर भी त्याग नहीं हुआ । तब उसने दंड-कमंडलु फेंक दिया । ऐसे कई बार त्याग किया । अंत में कच बोला : ''इस शरीर को चिता में जला देंगे ।''

बृहस्पतिजी ने हाथ पकड़ा : ''नहीं बेटा ! इसका नाम त्याग नहीं है । चित्तत्यागं विदुः सर्वत्यागम् ।'' अर्थात् जब चित्त का त्याग होगा तब सर्वत्याग होगा । चित्त का त्याग किये बिना कोई जीव मुक्त नहीं हो सकता । अतः चित्त-त्याग की इच्छा ही सच्ची मुमुक्षा है ।

चित्त के त्याग में ही ईश्वर का अनुभव है । अतः ईश्वर के अनुग्रह से ही मुमुक्षा चित्त में उदय होती है । जिसको ईश्वर आत्मसात् करना चाहता है उसीके हृदय में कृपा करके वह मुमुक्षा उदय करता है । इसलिए मुमुक्षा दुर्लभ है । धनभागी हैं वे मुमुक्षु ! उनके माता-पिता भी धन्य हैं ! धन्या माता पिता धन्यो...

१. ईश्वरानुग्रहादेव पुंसामद्वैतवासना । महद्भयपरित्राणा विप्राणामुपजायते ।। (अवधूत गीता : १.१)

२. मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये । यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ।। (गीता : ७.३)
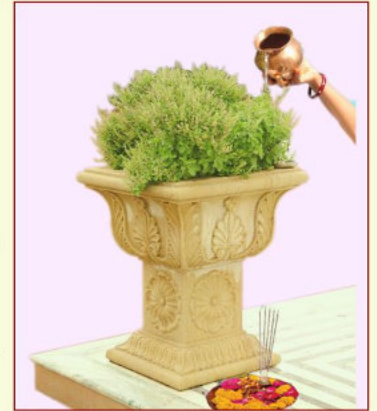
प्रश्न : गुरुदेव की सेवा किसे कहते हैं और कैसे करें ?

पूज्य बापूजी : गुरु की सेवा है उनकी आज्ञा को जितना हो सके ठीक समझकर अपने जीवन में उतारें।

अग्या सम न सुसाहिब सेवा।

(श्री रामचरित. अयो.कां. : ३००.२)

उत्तम सेवक सेवा खोज लेता है, उसे पता चल जाता है। मध्यम को संकेत करना पड़ता है और निम्न सेवक को आज्ञा देनी पड़ती है। चौथी और पाँचवीं श्रेणी का सेवक तो आज्ञा मिलने के बाद भी टालमटोल करेगा, दूसरे को कहेगा : 'यह कर दे, वह कर दे...' गुरुजी कुछ पूछें तो तुरंत जवाब देना चाहिए। गुरुजी कुछ पूछें और वह मौन रहे, कोई उत्तर न दे तो वह सेवक या शिष्य कहलाने लायक नहीं है, नालायक है।

गुरु सत्संग में भी हमारे लिए संकेत करते हैं। उस संकेत पर अमल करके उनकी आज्ञा मान ली तो हो गयी गुरु की सेवा। गुरु बोलते रहें और हम अपने अहं को पोसने में लगे रहें तो हो गया गुरु की आज्ञा का, गुरुसेवा का गला घोंटना।

प्रश्न : पूज्य बापूजी ! ईश्वरप्राप्ति हमारा लक्ष्य है लेकिन व्यवहार में हम भूल जाते हैं और भटक जाते हैं। कृपया व्यवहार में भी अपने लक्ष्य को सदैव याद रखने की युक्ति बतायें।

पूज्यश्री : कटहल काटना होता है तो हाथ में तेल चुपड़कर काटते हैं ताकि उसका दूध चिपके नहीं, नहीं तो हाथ से जल्दी उतरता नहीं है। ऐसे ही संसार का व्यवहार करो तो भगवद्भक्ति, ध्यान, जप आदि की चिकनाई हृदय को चुपड़कर फिर संसार में आओ ताकि संसार न चिपके और तुम्हारा काम भी हो जाय।

प्रश्न : आत्मचिंतन कैसे करना चाहिए ? आत्मसाक्षात्कार हो जाने पर पूरी दुनिया कैसी लगती है ?

पूज्य बापूजी : आत्मचिंतन का मतलब है 'अपना 'मैं' जहाँ से उठता है, जो सत् है, चित् है, आनंद है, जो दुःख को देखता है, सुख को जानता है वह कौन है ?'- ऐसा चिंतन। हानि-लाभ, अनुकूलता-प्रतिकूलता आने पर मूढ़ उनमें डूब जाते हैं जबकि आत्मचिंतन करनेवाले दोनों का मजा लेते हैं : 'मैं इनका द्रष्टा हूँ, साक्षी हूँ, असंग हूँ।' 'मैं कौन हूँ ?' चिंतन करके शांत होगा तो उत्तर भी आयेगा, अनुभव भी होगा। श्री योगवासिष्ठ महारामायण, विचारसागर, विचार चन्द्रोदय आदि ग्रंथों का अध्ययन करके अथवा (आश्रम से प्रकाशित पुस्तक) 'श्री नारायण स्तुति' पढ़कर शांत हो जाओ।

आत्मसाक्षात्कार हो जाने पर दुनिया वैसी ही दिखेगी जैसी अभी दिखती है लेकिन लोगों को सच्ची दिखती है, आत्मसाक्षात्कारी महापुरुष को मिथ्या अथवा स्वप्नवत् दिखती है, भगवद्रूप दिखती है, ब्रह्मरूप दिखती है। तुमने अँधेरे में दूर से साँप देखा, डरकर काँपने लगे। बत्ती ले के आये, नजदीक से देखा तो 'अरे ! यह तो रस्सी है।' फिर वापस उसी जगह पर आ गये। अभी भी साँप जैसा दिखता है लेकिन अब साँप का डर नहीं रहेगा। एक बार देख लिया फिर चाहे पहले कैसी भी कल्पनाएँ की हों, वे सब हट गयीं। जो है सो है... फिर संसार से सुख लेने की कामना नहीं होगी। अपने-आपमें तृप्ति होगी, संतुष्टि होगी और 'अपना आपा केवल शरीर में नहीं, अनंत ब्रह्मांडों में व्याप रहा है' ऐसा अनुभव होगा। वह अनुभव कैसा होगा, वहाँ वाणी नहीं जाती। ब्रह्मा, विष्णु, महेश और उनके लोकों को भी व्यापकर ब्रह्मवेत्ता सभीको अपने में ही जानते हैं। वे चिदाकाशमय हो जाते हैं। जैसे आकाश सबमें - सब आकाश में, ऐसे ही चिदाकाशस्वरूप पूजनीय पुरुष। यहाँ बयान नहीं होता है। मत करो वर्णन हर बेअंत है। फिर भी वर्णन अपनी दृष्टि से किया साधकों को समझाने हेतु।

सत्संग से मिटा मानसिक अवसाद

मैं एक शिक्षिका हूँ। पहले मैं बहुत अशांत और निराशायुक्त जीवन जी रही थी। हर माह ढेरों अंग्रेजी (एलोपैथिक) दवाएँ खाती थी। भगवान की कृपा से मुझे पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा लेने का सुअवसर मिला। उनके सान्निध्य व सत्संग से मेरे जीवन में बड़े सुखद परिवर्तन आये हैं। बापूजी के निर्देशानुसार प्राणायाम, जप करने से पिछले १२ सालों से मैंने आज तक कोई भी अंग्रेजी दवाई नहीं खायी। जो शांति करोड़पति के घरों में भी नहीं वह शांति बापूजी ने मुझे हँसते-खेलते दी है। आज मैं बहुत आनंदित हूँ। मैं २००४ से हर वर्ष अहमदाबाद आश्रम में अनुष्ठान हेतु जाती हूँ।

हमारे सम्पर्क में आनेवालों को भी बापूजी के सत्संग से बहुत लाभ होते हैं। अगरतला (त्रिपुरा) के एक पुलिस ऑफिसर मानसिक रोग से पीड़ित थे। बापूजी के सत्संग की एक सीडी 'आस्था और विवेक' सुनने से वे पूरी तरह ठीक हो गये। दयालु बापूजी से समाज का दुःख सहन नहीं होता इसलिए सत्संग के द्वारा करोड़ों परिवारों को व्यसन, रोग व चिंता मुक्त कर रहे हैं। समाज उनका ऋणी है। वे तो सबका कल्याण ही चाहते हैं। बापूजी सत्य, आनंद, ज्ञान, शांति के प्रतीक हैं। वे एक अवतारी महापुरुष हैं, उनको समझने के लिए अंदर में सच्चाई चाहिए। वे पूरी तरह निर्दोष हैं।

- मंदिरा मजूमदार, शिलोंग (मेघालय)
सचल दूरभाष : ०९४०२१९५१७५

मेरे अवॉर्ड उनकी कृपा

मैं एक सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य हूँ। पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा लेने से मेरे जीवन में बहुत अच्छे परिवर्तन आये हैं। पूज्य बापूजी के सान्निध्य में एवं उनकी प्रेरणा से देशभर में विद्यार्थी शिविर होते रहे, जिनसे विद्यार्थियों को सफल एवं उन्नत होने के उपाय मिले। उन्हींसे मैंने प्रेरणा ली और विद्यार्थियों तथा विद्यालय के विकास के लिए सतत प्रयत्नशील रहा, समाजसेवा के कार्य किये। फलतः बापूजी की कृपा से मुझे १९९५ से अब तक पाँच अवॉर्ड मिल चुके हैं।

मुझे श्रेष्ठ शिक्षक (जिला स्तरीय), श्रेष्ठ शिक्षक (राज्य स्तरीय), श्रेष्ठ आचार्य (जिला स्तरीय), लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड तथा राष्ट्रपति द्वारा 'देश के श्रेष्ठ शिक्षक' के अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है। यह सब गुरुकृपा से ही सम्भव हुआ है।

बापूजी सभीको व्यसनमुक्त रहने का उपदेश देते थे अतः मैंने अपने आसपास के हजारों विद्यार्थियों तक बापूजी के सत्संग की जीवन-परिवर्तक पुस्तक 'नशे से सावधान' पहुँचायी। ऐसे संतों को और उनके कार्यों को साधारण बुद्धिवाला व्यक्ति नहीं समझ सकता। बापूजी समाज का जो सच्चा हित कर रहे हैं वह कोई भगवत्स्वरूप महापुरुष ही कर सकते हैं, अतः मैं उन्हें भगवान मानता हूँ और उनके श्रीचरणों में बार-बार प्रणाम करता हूँ।

- लक्ष्मण भाई वाळंद (वालंद)
बड़ौदा (गुज.)
सचल दूरभाष : ०९८२४०७४१०२

स्वास्थ्य व सत्त्व वर्धक
बिल्वपत्र

बिल्वपत्र (बेल के पत्ते) उत्तम वायुशामक, कफ-निस्सारक व जठराग्निवर्धक हैं। ये कृमि व शरीर की दुर्गंध का नाश करते हैं। बिल्वपत्र ज्वरनाशक, वेदनाहर, संग्राही (मल को बाँधकर लानेवाले) व सूजन उतारनेवाले हैं। ये मूत्रगत शर्करा को कम करते हैं, अतः मधुमेह में लाभदायी हैं। बिल्वपत्र हृदय व मस्तिष्क को बल प्रदान करते हैं। शरीर को पुष्ट व सुडौल बनाते हैं। इनके सेवन से मन में सात्त्विकता आती है।

कोई रोग न भी हो तो भी नित्य बिल्वपत्र या इनके रस का सेवन करें तो बहुत लाभ होगा। बेल के पत्ते काली मिर्च के साथ घोट के लेना स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हितकर है। इनके रस में शहद मिलाकर लेना भी लाभकारी है।

औषधीय प्रयोग

मधुमेह (डायबिटीज) : बिल्वपत्र के १०-१५ मि.ली. रस में १ चुटकी गिलोय का सत्त्व एवं १ चम्मच आँवले का चूर्ण मिला के लें।

स्वप्नदोष : बेलपत्र, धनिया व सौंफ समभाग लेकर कूट लें। यह १० ग्राम मिश्रण शाम को १२५ मि.ली. पानी में भिगो दें। सुबह खाली पेट लें। इसी प्रकार सुबह भिगोये चूर्ण को शाम को लें। स्वप्नदोष में शीघ्र लाभ होता है। प्रमेह एवं श्वेतप्रदर रोग में भी यह लाभकारी है।

धातुक्षीणता : बेलपत्र के ३ ग्राम चूर्ण में थोड़ा शहद मिला के सुबह-शाम लेने से धातु पुष्ट होती है।

मस्तिष्क की गर्मी : बेल की पत्तियों को पानी के साथ मोटा पीस लें। इसका माथे पर लेप करने से मस्तिष्क की गर्मी शांत होगी और नींद अच्छी आयेगी।

छोटी पर निरोगता के लिए जरूरी बातें

* शक्कर की बनी मिठाइयाँ, चाय, कॉफी, अति खट्टे फल, अति तीखे, अति नमकयुक्त तथा उष्ण-तीक्ष्ण व नशीले पदार्थों के सेवन से वीर्य में दोष आ जाते हैं।

* प्रातः उठते ही ६ अंजलि जल पियो। सूर्यास्त तक २ से ढाई लीटर जल अवश्य पी जाओ। गर्मियों में व जब शरीर से श्रम करो, तब इससे अधिक जल की आवश्यकता होती है।

* जिन सब्जियों का छिलका बहुत कड़ा न हो, जैसे गिल्की, परवल, टिंडा आदि, उन्हें छिलकेसहित खाना अत्यंत लाभकारी है। जिन फलों के छिलके खा सकते हैं, जैसे सेवफल, चीकू आदि, उन्हें खूब अच्छी तरह धो के छिलकों के साथ ही खाना चाहिए। दाल भी छिलकेसहित खानी चाहिए। चोकर तथा छिलके में पोषक तत्त्व होते हैं और इनसे पेट साफ रहता है। सब्जी, फल आदि धोने के बाद कीटनाशक आदि रसायनों का अंश छिलकों

पर न बचा हो इसका ध्यान रखें, अन्यथा नुकसान होगा। सेवफल को चाकू से हलका-सा रगड़कर उस पर लगी मोम उतार लेनी चाहिए।

* घी-तेल में तले हुए पकवानों का कभी-कभी ही सेवन करना चाहिए। नित्य या प्रायः तली हुई पूड़ी-पकवान, पकौड़े, नमकीन खाने से कुछ दिनों में पेट में कब्ज रहने लगेगा, अनेक बीमारियाँ बढ़ेंगी।

* खटाई में नींबू व आँवले का सेवन उत्तम है। कोकम व अनारदाने का उपयोग अल्प मात्रा में कर सकते हैं। अमचूर हानिकारक है।

* भोजन इतना चबाना चाहिए कि गले के नीचे पानी की तरह पतला हो के उतरे। ऐसा करने से दाँतों का काम आँतों को नहीं करना पड़ता। इसके लिए बार-बार सावधान रहकर खूब चबा के खाने की आदत बनानी पड़ती है।

* अच्छी भूख लगने पर ही भोजन करें, बिना भूख का भोजन विकार पैदा करता है।

* भोजन के बाद स्नान नहीं करना चाहिए। अधिक यात्रा के बाद तुरंत स्नान करने से शरीर अस्वस्थ हो जाता है। थोड़ी देर आराम करके स्नान कर सकते हैं।

बदन-दर्द के सचोट उपाय

(१) २५-३० मि.ली. सरसों के तेल में लहसुन की छिली हुई चार कलियाँ व आधा चम्मच अजवायन डाल के धीमी आँच पर पकायें। लहसुन और अजवायन काली पड़ने पर तेल उतार लें, थोड़ा ठंडा होने पर छान लें। इस गुनगुने तेल की मालिश करने से वायु-प्रकोप से होनेवाले बदन-दर्द में राहत मिलती है।

(२) १०० ग्राम सरसों के तेल में ५ ग्राम कपूर डालें और शीशी को बंद करके धूप में रख दें। तेल में कपूर अच्छी तरह से घुलने पर इसका उपयोग कर सकते हैं। इसकी मालिश से वातविकार तथा नसों, पीठ, कमर, कूल्हे व मांसपेशियों के दर्द आदि में लाभ होता है। माताएँ छाती पर यह तेल न लगायें, इससे दूध आना बंद हो जाता है।

सिर व बालों की समस्याओं से बचने हेतु

सर्वांगासन ठीक ढंग से करते रहने से बालों की जड़ें मजबूत होती हैं, झड़ना बंद हो जाता है और बाल जल्दी सफेद नहीं होते, काले, चमकीले और सुंदर बन जाते हैं। आँवले का रस कभी-कभी बालों की जड़ों में लगाने से उनका झड़ना बंद हो जाता है। (सर्वांगासन की विधि आदि पढ़ें आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'योगासन' के पृष्ठ १५ पर।)

युवावस्था से ही दोनों समय भोजन करने के बाद वज्रासन में बैठकर दो-तीन मिनट तक लकड़ी की कंघी सिर में घुमाने से बाल जल्दी सफेद नहीं होते तथा वात और मस्तिष्क की पीड़ा संबंधी रोग नहीं होते। सिरदर्द दूर होकर मस्तिष्क बलवान बनता है। बालों का जल्दी गिरना, सिर की खुजली व गर्मी आदि रोग दूर होने में सहायता मिलती है। गोझरण अर्क में पानी मिलाकर बालों को मलने से वे मुलायम, पवित्र, रेशम जैसे हो जाते हैं। घरेलू उपाय सात्त्विक, सचोट और सस्ते हैं बाजारू चीजों से।

व्यापक सामाजिक उत्थान का पर्व : 'विश्व सेवा-सत्संग दिवस'

पूज्य बापूजी का ७९वाँ अवतरण दिवस अर्थात् 'विश्व सेवा-सत्संग दिवस' देश-विदेश में बड़े उत्साह के साथ व्यापक स्तर पर मनाया गया । पूज्यश्री के अवतरण दिवस पर विविध सेवा-अभियानों से समाज का उत्थान तो होता ही है, साथ ही इन अभियानों में लगने से साधकों की सेवा-साधना पुष्ट होती है और उन्हें भी लाभ होता है ।

सोशल मीडिया पर देश-विदेश के लोगों में पूज्य बापूजी का अवतरण दिवस खासा चर्चा का विषय बना रहा । एक-दूसरे को इस पवित्र, प्रेरणादायी दिवस की बधाइयाँ देने का सिलसिला ऐसा तो चला कि ट्विटर पर भारत में '#विश्व_सेवा_दिवस' ट्रेंड कई घंटों तक अव्वल स्थान पर रहा ।

इस पर्व पर सभी संत श्री आशारामजी आश्रमों, आश्रम की समितियों, युवा सेवा संघों, महिला उत्थान मंडलों ने अपने-अपने गाँवों-शहरों में बड़ी भव्यता के साथ अवतरण दिवस पर समाजोत्थान के विविध कार्यक्रम आयोजित किये ।

शीतल शरबत व छाछ वितरण अभियान

अवतरण दिवस पर देश के विभिन्न शहरों में सार्वजनिक स्थलों पर निःशुल्क शरबत (पलाश, गुलाब आदि) तथा छाछ वितरण केन्द्र खोले गये । वर्षभर तथा विशेषरूप से गर्मियोंभर चलनेवाले इस अभियान का नवीनीकरण भी अवतरण दिवस पर हुआ । इस अवसर पर प्रसाद के रूप में पुलाव, हलवा, फल आदि भी बाँटे गये ।

अहमदाबाद शहर में १० जगहों पर पलाश शरबत-वितरण हुआ । रायपुर आश्रम ने ग्रीष्म ऋतु की समाप्ति तक जरूरतमंद इलाकों में टैंकर द्वारा निःशुल्क पानी-वितरण सेवा का शुभारम्भ किया ।

सेवक में इतनी शक्ति होती है कि वह अगर ईमानदारी से सेवा करता है और अपनी सेवा में विफल होता है तो स्वामी - परमात्मा उसको सहाय करते हैं।

गरीबों में जीवनोपयोगी वस्तु-वितरण व भंडारे

देशभर के आश्रमों व समितियों द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों के गरीबों में भंडारे किये गये, उन्हें कपड़े, बर्तन, चप्पलें, मिठाई, अनाज, नकद रुपये आदि तथा जरूरतमंद बच्चों को नोटबुक, पेन, सत्साहित्य आदि प्रदान किये गये। कई स्थानों पर अस्पतालों में फल आदि सामग्री वितरित की गयी।

संकीर्तन यात्राएँ

इस पर्व के निमित्त देशभर में निकली हरिनाम संकीर्तन यात्राओं द्वारा भगवन्नाम के आनंद-माधुर्य को बाँटकर गली-गली को पावन किया गया। संत-महापुरुषों की शिक्षाओं, देशभक्ति, गौसेवा, संस्कृति-रक्षा, गरीबों की सेवा के संदेश को दर्शाती विशेष झाँकियों द्वारा समाज को प्रेरणा दी गयी तथा सत्साहित्य-वितरण भी किया गया। यात्राओं में उमड़ी भीड़ ने स्पष्ट कर दिया कि इतने घोर षड्यंत्र के बावजूद भी बापूजी के शिष्यों की श्रद्धा में थोड़ी भी कमी नहीं आयी है।

जोधपुर में अवतरण दिवस के निमित्त हुए पाँच दिवसीय कार्यक्रम के तहत सफाई अभियान, छाछ, शरबत व प्रसाद वितरण, संकीर्तन यात्रा, जरूरतमंदों में भंडारा व जीवनोपयोगी सामग्री-वितरण आदि सेवाकार्य सम्पन्न हुए।

दीपकों से सजी जोधपुर कारागृह की दीवारें, फूलों से सजा प्रवेश-द्वार, रंगोलियों आदि से सजी कारागृह के पास की सड़क एवं वहाँ का श्रद्धा-भक्तिमय वातावरण - ये सब वहाँ से गुजरनेवाले लोगों को मानो अवतरण दिवस की बधाई दे रहे थे। यहाँ पर बड़ी संख्या में उपस्थित साधकों ने प्रार्थना, जप, आरती, पूजन करके अवतरण दिवस मनाया।

अन्य सेवाकार्य

कोटा (राज.) में निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाया गया। कराड जि. सातारा (महा.) में निःशुल्क नेत्ररोग चिकित्सा शिविर तथा रोहतक एवं रेवाड़ी (हरि.) में तीन दिवसीय एक्यूप्रेशर एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर लगाये गये। रजोकरी-दिल्ली, इंदौर, ग्वालियर, सूरत, पटना, भुवनेश्वर आदि में 'तेजस्वी युवा शिविर' हुए।

सबके रूपों में वही है अनंत !

आध्यात्मिक विष्णु पुराण कहता है : 'वह तुम हो जहाँ से 'मैं-मैं' स्फुरित होता है। वही तुम्हारा 'मैं' जीव भी बन जाता है, वही तुम्हारा 'मैं' ईश्वर भी बन जाता है। सबसे प्यारा, सबका प्यारा अपना आत्मा है। दूर नहीं, दुर्लभ नहीं, परे नहीं, पराया नहीं। ॐ... ॐ... ॐ...

सबके रूपों में वही है अनंत ! अनेक दिखते हुए भी अद्वितीय। अनंत दो नहीं होते। अनंत दो या एक होगा तो अनंत कैसे रहेगा ? सारे दुःखों व मुसीबतों का मूल है सच्चे अनंत अपने-आपको भूलना और मिथ्या द्वैत को सच्चा मानना।'

चांदणा कुल जहान का तू,
तेरे आसरे होय व्यवहार सारा।
तू सब दी आँख में चमकदा है,
हाय चांदणा तुझे सूझता अँधियारा ।।
जागना सोना नित ख्वाब तीनों,
होवे तेरे आगे कई बारा।
बुल्लाशाह प्रकाश स्वरूप है,
इक तेरा घट वध न होवे यारा ।।

प्रकाशस्वरूप तेरा अनंत एकरस आत्मा है। खोज ले ब्रह्मज्ञानियों की शरण, जो जगा दें परब्रह्म स्वभाव में ! श्रीकृष्ण कहते हैं :

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ।।

'उस ज्ञान को तू तत्त्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ। उनको भलीभाँति दंडवत् प्रणाम करने से, उनकी सेवा करने से और कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म-तत्त्व को भलीभाँति जाननेवाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे।' (गीता : ४.३४)

आम के रस से सातों धातुओं की वृद्धि होती है। यह उत्तम हृदयपोषक है। वीर्य की शुद्धि व वृद्धि करता है तथा आलस्य को दूर करता है। मूत्र साफ लाता है। गुर्दों व मूत्राशय के लिए शक्तिदायक है। दुबले-पतले एवं वृद्ध लोगों को पुष्ट बनाने हेतु यह उत्तम पेय है।

एक लीटर मात्र ₹ ५५ में

गुलाब महक

यह प्राकृतिक सुंदरता को निखारता है, त्वचा में चमक लाता है। यह शीतल, शरीर के रंग को उत्तम करनेवाला व त्रिदोषनाशक है। इसके उपयोग से दिनभर की थकान दूर होकर ताजगी आती है।

नियमित उपयोग से त्वचा साफ होकर चेहरे की कांति बढ़ती है। गर्मी के कारण होनेवाली फुंसियाँ कम होती हैं। आँखों में एक-एक बूँद डालने से शीतलता तथा राहत मिलती है। यह मुँहासों, त्वचा के लाल चकत्तों तथा आँखों के नीचे के काले घेरों को दूर करने में सहायक है।

मूल्य : ₹ ३५
२२५ मि.ली.

मूल्य : ₹ ३५
१०० मि.ली.

मूल्य : ₹ ४०
०० मि.ली.

बालों के लिए उत्तम टॉनिक

केश पोषक

यह बालों को झड़ने से रोकता है तथा रूसी मिटाकर बाल मुलायम, काले, मजबूत, लम्बे, चमकदार तथा घने बनाता है। असमय सफेद हो रहे बालों तथा गंजेपन में यह उपयोगी है। इसे लगाने के १५ मिनट बाद आँवला भृंगराज केश तेल लगायें तो और अधिक लाभ होता है।

मजबूत तथा सुंदर बालों के लिए

आँवला भृंगराज केश तेल

यह बालों का झड़ना, असमय सफेद होना, रूसी आदि समस्याओं को दूर करता है। यह बालों की जड़ों को मजबूत करता है व उनको बढ़ाकर उनमें चमक लाता है। दिमाग को ठंडा रखता है तथा सिरदर्द में लाभप्रद है। इसके उपयोग से मस्तिष्क की कमजोरी दूर होती है और स्मरणशक्ति बढ़ती है।

प्राप्ति हेतु नजदीकी संत श्री आशारामजी आश्रम या समिति के सेवाकेन्द्र अथवा ०९२१८११२२३३ पर सम्पर्क करें। ई-मेल : hariomcare@gmail.com

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2015-17
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2017)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/15-17
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2017)
Posting at Dehradun G.P.O.
between 4th to 20th of every month.
Date of Publication: 1st June 2016

संत-सम्मेलन 19
उज्जैन महाकुम्भ

उज्जैन कुम्भ में हुए संत-सम्मेलन में की गयी निर्दोष बापूजी की शीघ्र रिहाई की माँग

गत माह हुए विद्यार्थी शिविरों तथा योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रमों की कुछ झलकें

रायपुर (छ.ग.)
सूरत (गुज.)
चांदूर रेलवे, जि. अमरावती (महा.)
सातारा (महा.)
बिलासपुर (छ.ग.)
भावनगर (गुज.)
बेलौदी, जि. दुर्ग (छ.ग.)
बाड़मेर (राज.)
बड़ौदा (गुज.)
महासमुंद (छ.ग.)
सुमेरपुर (राज.)
पटियाला (पंजाब)
कटक (ओड़िशा)
भिवानी (हरि.)
फरसगाँव, जि. कोंडागाँव (छ.ग.)

ऋषि प्रसाद सम्मेलनों में सत्संग-प्रसाद घर-घर पहुँचाने का संकल्प लेते गुरुसेवा में तत्पर पुण्यात्मा

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

डॉ. रामविलास वेदांतीजी, लोकसभा के पूर्व सदस्य : भारतीय संस्कृति की रक्षा कैसे हो, धर्म की रक्षा कैसे हो, मठ-मंदिरों की रक्षा कैसे हो इसका चिंतन व कार्य हमारे पूज्य संत आशाराम बापूजी कर रहे थे। वैश्विक विदेशी ताकतें चाहती हैं कि ये काम बंद हो जायें। मैं चाहता हूँ कि ऐसे महापुरुष जिन्होंने देश में भक्ति का, ज्ञान का, वेदांत का प्रचार-प्रसार कर समाज को संगठित करने का काम किया है, वे जल्दी-से-जल्दी जेल से बाहर आ जायें।
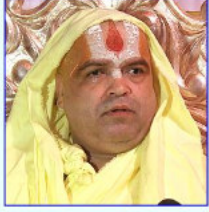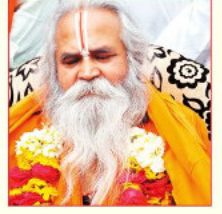
जगद्गुरु डॉ. स्वामी अरूपानंदाचार्यजी, उत्कल पीठाधीश्वर : आशारामजी बापू ने क्या गुनाह किया है ? कोई साबित हुए हैं क्या ? फिर उनको इतने दिनों से जेल में क्यों रखा हुआ है ? संवैधानिक नियम में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। इसलिए सभी संतों-महंतों को एकत्र होकर प्रयत्न करना चाहिए।

श्रीमद् जगद्गुरु अनंतानंद द्वाराचार्य स्वामी डॉ. रामकमलदास वेदांतीजी : तमाम साधु-संतों पर प्रहार किये जा रहे हैं। यह अत्याचार है, अनाचार है, संस्कृति पर एक प्रहार है। संत आशारामजी बापू ने कितने ही कार्य देश और धरती के लिए किये, उनको भी देखा जाना चाहिए। उनके साथ न्याय होना चाहिए, अत्याचार-उत्पीड़न इस देश के अंदर औचित्यपूर्ण नहीं है।

जगद्गुरु स्वामी बलदेवदासजी, श्री दाउजी धाम खालसा (राज.) : बहुत-से आरोप मीडिया ने उछालकर दिखाये हैं। आशाराम बापू को बदनाम करने के लिए मीडिया ने षड्यंत्र किया है। हमारा मन कभी नहीं मानता है कि इस प्रकार की शिक्षा देनेवाले और दुनिया में जिनके करोड़ों शिष्य हैं, वे कभी भी इस प्रकार की अनैतिकता कर सकते हैं। सत्य सत्य ही रहेगा। आशाराम बापू के ऊपर जो दोषारोपण किया गया है, वह गलत है। कुछ ही समय में आशारामजी बापू निर्दोष साबित होकर बाहर आयेंगे।

अनंतश्री विभूषित जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्री राघवाचार्यजी : आज भी महात्माओं-संतों द्वारा हिन्दू धर्म सुरक्षित है। तो तथाकथित सेक्यूलर लोगों ने, हिन्दू धर्म के विरोधी लोगों ने यह एक नया रास्ता निकाला कि 'संत-महात्माओं को ही बदनाम कर दिया जाय। इनके प्रति समाज की जो आस्था है वह टूट जायेगी तो अपने-आप धर्म का जो विस्तार हो रहा है वह रुक जायेगा।' इस दृष्टि से इन लोगों ने ऐसे बहुत सारे संतों के ऊपर विभिन्न प्रकार के आरोप लगा के मीडिया के माध्यम से यह कुचक्र रचा है।

महंत यति बाबा नरसिम्हानंद सरस्वतीजी : अच्छी तरह से जानता हूँ कि जिस केस में आशारामजी बापू फँसे हैं वह झूठा है और उन्हें षड्यंत्र करके फँसाया गया है ताकि ईसाई मिशनरियाँ हिन्दू धर्म को समाप्त कर सकें।